वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक
फरवरी 16-28, 2025

# हिन्दू विश्व

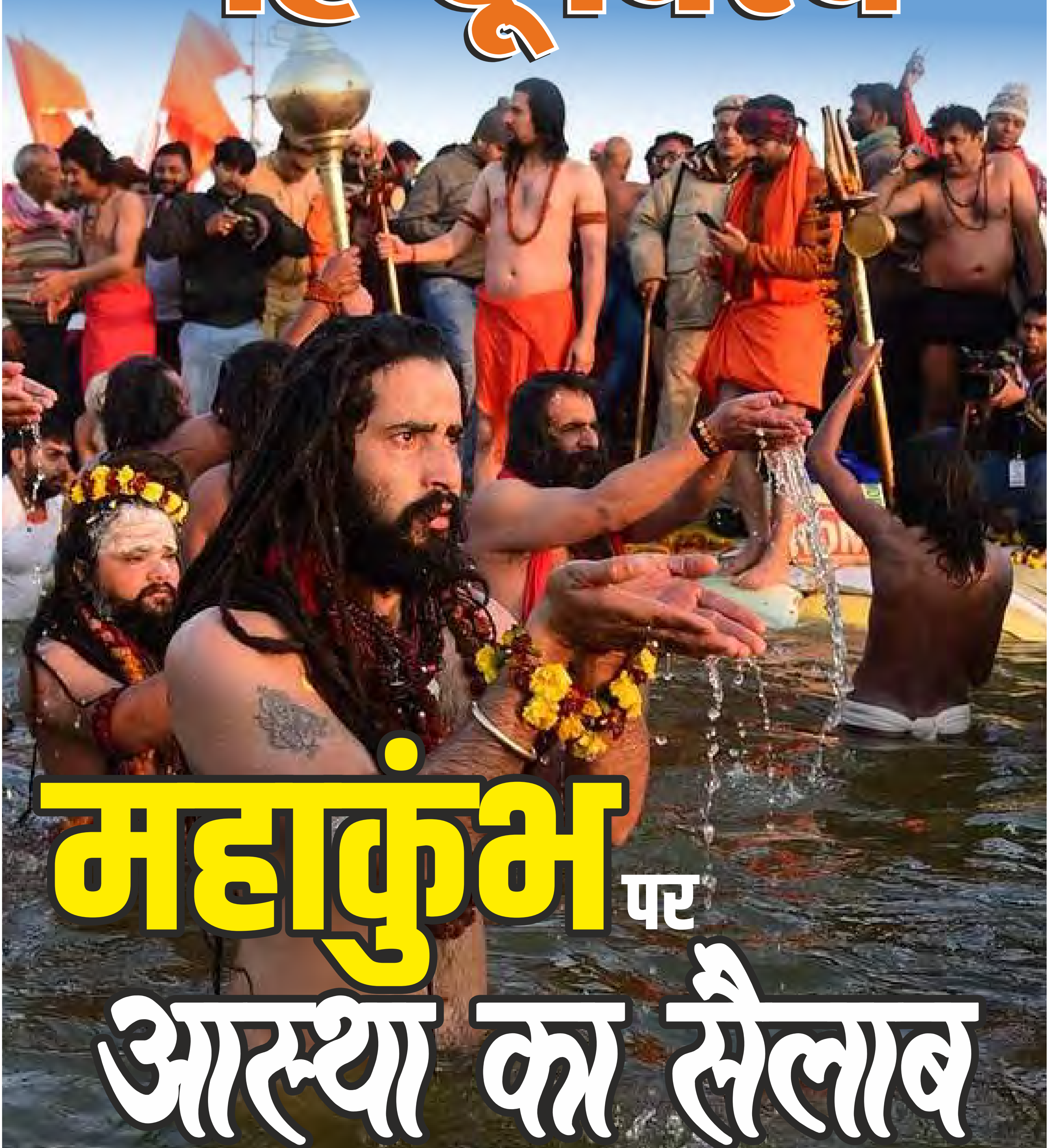

# महाकुंभ पर आस्था का सैलाब

@eHinduVishwa
/HinduVishwa

गोधरा (दक्षिण गुजरात) में समरसता संगोष्ठी कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप सह संगठन महामंत्री
श्री विनायकराव देशपाण्डे तथा कार्यक्रम में उपस्थित सर्व समाज के बंधु, भगिनी

प्रयागराज में आयोजित विश्व बौद्ध सम्मेलन में बौद्ध संतों के साथ उपस्थित विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद पराण्डे जी

वेद विद्यालय के विद्यार्थियों के पंच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते
विहिप संगठन महामंत्री मिलिन्द पराण्डे तथा मंच पर उपस्थित केन्द्रीय मंत्री अशोक तिवारी व केन्द्रीय सहमंत्री श्री हरिशंकर जी

## इस पक्ष में ....


# हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक


हे शुभ कर्मपालक अश्विनीकुमारों! आपने तीन बार हमें (द्युस्थानीय) दिव्य औषधियाँ, तीन बार पार्थिव औषधियाँ तथा तीन बार जलौषधियाँ प्रदान की हैं। हमारे पुत्र को श्रेष्ठ सुख एवं संरक्षण दिया है और तीन धातुओं (वात-पित्त-कफ) से मिलने वाला सुख, आरोग्य एवं ऐश्वर्य भी प्रदान किया है।

– ऋग्वेद


16-28 फरवरी, 2025
फाल्गुन कृष्ण - शुक्ल पक्ष
पिंगल संवत्सर
वि. सं. - 2081, युगाब्द- 5126

**सम्पादक**
विजय शंकर तिवारी

**सह सम्पादक**
मुरारी शरण शुक्ल
**मो. - 7217685539**

**परामर्शदाता**
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा, धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार, रवि पराशर

**व्यवस्थापक**
श्री दूधनाथ शुक्ल
**मो. - 09582555152**

**सज्जा**
श्री महेश कुशवाहा

**कार्यालय :**
**'हिन्दू विश्व'**
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishwa@gmail.com

**- : मूल्य :-**
विदेशों के लिए $75 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित
एक प्रति 15/-
वार्षिक 300/-
त्रिवर्षीय 750/-
पंचवर्षीय 1,200/-
दसवर्षीय 2,250/-
पन्द्रह वर्षीय 3,100/-

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।



**वैधानिक सूचना**
- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।



कुल पेज - 28

05

# हिन्दू आस्था का प्रबल प्रवाह
## श्रद्धालु सँख्या होगी 50 करोड़ के पार: महाकुंभ 2025

विहिप महाकुंभ शिविर में बौद्ध सम्मेलन का आयोजन 07
हमारी हिन्दू सँस्कृति, एकत्व भाव का प्रतिबिम्ब है कुंभ मेला 08
क्या अकबर ने कुंभ मेले की शुरूआत की थी 10
बैद्ध धर्म सनातन धर्म का ही अंग है 13
भारत के लिए खतरा है पाक-बाँग्लेदेश की नजदीकियां 15
विश्व हिन्दू परिषद सेवा साधना 17
समाजसेवी पुलिस अधिकारी आचार्य किशोर कुणाल 19
अगरबत्ती : सुगंध, आध्यात्मिकता और स्वास्थ्य का संगम 20
क्षारीय भोजन से स्वास्थ्य पायें 22
प्रयागराज में विहिप-केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक 23
दक्षिण गुजरात में समरसता यात्रा संपन्न 24
'विहिप धर्मरक्षा कार्यक्रम आयोजित' 25
हिंदू हेरिटेज सेंटर मकर संक्रांति (पतंग महोत्सव) को नई ऊंचाइयों पर ले जाता है 26


## सुभाषित

**सुवृत्तः शीलसम्पन्नः प्रसन्नात्मात्मविद्बुधः।**
**प्राप्येह लोके सत्कारं सुगतिं प्रतिपद्यते।।**

*जो सदाचारी, शीलसम्पन्न, प्रसन्नचित्त और आत्मतत्त्व को जानने वाला है, वह विद्वान् पुरुष इस लोक में सत्कार पाकर परलोक में परम गति पाता है।*

# हमारी सनातन सँस्कृति व सभ्यता कहती है कि
# भारत हिंदू राष्ट्र है

## सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

भारत एक हिंदू राष्ट्र है – यह न केवल हमारा विश्वास है, बल्कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक सत्य भी है। भले ही भारतीय संविधान ने इसे औपचारिक रूप से "हिंदू राष्ट्र" न घोषित किया हो, लेकिन भारत का अस्तित्व और उसकी आत्मा सनातन धर्म में रची–बसी है। इस तथ्य को न केवल भारत के नागरिक, बल्कि समूची दुनिया भी स्वीकार करती है।

### भारत का साँस्कृतिक और ऐतिहासिक स्वरूप

भारत की पहचान केवल एक भौगोलिक इकाई तक सीमित नहीं है; यह एक महान सनातनी सभ्यता है, जिसकी जड़ें हजारों वर्षों पुरानी हैं। ऋग्वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण, पुराण और स्मृतियाँ हमारे साँस्कृतिक आधारस्तंभ हैं। यहीं से "वसुधैव कुटुंबकम्" और "सर्वे भवंतु सुखिनः" जैसे महान विचार जन्म लेते हैं। यदि हम इतिहास को देखें, तो भारत में वैदिक काल से ही हिंदू सँस्कृति का वर्चस्व रहा है। मौर्य, गुप्त, चोल, मराठा और अन्य हिंदू राजवंशों ने भारत की साँस्कृतिक और राजनीतिक एकता को बनाए रखा। विदेशी आक्रमणों और औपनिवेशिक शासनों के बावजूद, हिंदू समाज अपनी जड़ों से कभी नहीं हटा।

### संविधान और हिंदू राष्ट्र की अवधारणा

भारत का संविधान धर्मनिरपेक्षता को स्वीकार करता है, लेकिन यह धर्मनिरपेक्षता पश्चिमी देशों की तरह चर्च और राज्य के स्पष्ट अलगाव की नीति पर आधारित नहीं है। संविधान के अनुच्छेद 25 से 30 तक हिंदू धर्म और इसकी परंपराओं की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं। हिंदू मंदिरों और धार्मिक संस्थाओं का सरकारी नियंत्रण भी इस बात का संकेत है कि राज्य हिंदू समाज के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। संविधान निर्माताओं में से कई, विशेष रूप से डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर, स्वयं यह मानते थे कि भारत की सांस्कृतिक पहचान हिंदू परंपराओं से जुड़ी हुई है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने स्पष्ट रूप से कहा था कि भारत एक प्राचीन सनातनी भूमि है और इसकी आत्मा हिंदू सँस्कृति में बसती है।

### विश्व का दृष्टिकोण : भारत हिंदू राष्ट्र के रूप में

आज विश्व भारत को केवल एक राष्ट्र–राज्य के रूप में नहीं देखता, बल्कि उसे सनातन संस्कृति की जन्मभूमि और हिंदू राष्ट्र के रूप में पहचानता है। नेपाल, इंडोनेशिया, थाईलैंड, कंबोडिया जैसे देशों की संस्कृति पर भारत का गहरा प्रभाव रहा है। हाल ही में, इंडोनेशिया के राष्ट्रपति के शपथ ग्रहण समारोह में भगवद्गीता का पाठ किया गया, जो इस बात का प्रमाण है कि विश्व भारत को हिंदू राष्ट्र के रूप में स्वीकार कर रहा है। अमेरिका और यूरोप में भी योग, वेदांत, और भगवद्गीता के प्रति बढ़ती रुचि यह दर्शाती है कि हिंदू जीवनदर्शन वैश्विक स्तर पर स्वीकार किया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून को "अंतरराष्ट्रीय योग दिवस" घोषित किया, जो भारत की हिंदू पहचान को मान्यता देने का ही एक रूप है।

### हिंदू राष्ट्र की अवधारणा : बहुलतावाद और सहिष्णुता

भारत को हिंदू राष्ट्र कहने का अर्थ यह नहीं है कि यहाँ अन्य धर्मों के लिए स्थान नहीं है। हिंदू संस्कृति सदैव सर्वसमावेशी रही है। इसने जैन, बौद्ध, सिख, यहूदी, पारसी और इस्लाम जैसे मतों को अपने भीतर स्थान दिया है। हिंदू राष्ट्र का अर्थ संकीर्ण राष्ट्रवाद नहीं, बल्कि एक ऐसी सभ्यता है, जो "एकं सत् विप्राः बहुधा वदंति" के सिद्धांत को अपनाती है।

### हमें शंका क्यों नहीं होनी चाहिए?

यदि हम अपनी परंपरा, इतिहास और सँस्कृति को गहराई से समझें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत मूलतः और स्वाभाविक रूप से एक हिंदू राष्ट्र है। यह सत्य केवल हमारी मान्यता पर आधारित नहीं, बल्कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक वास्तविकता पर टिका हुआ है। इसलिए हमें इसमें कोई संदेह नहीं रखना चाहिए। भारत हिंदू राष्ट्र था, है और रहेगा–चाहे इसे संविधान में लिखा जाए या नहीं, यह हमारी अस्मिता और राष्ट्रीय चेतना में सदा जीवित रहेगा।

**भारत की पहचान केवल एक भौगोलिक इकाई तक सीमित नहीं है; यह एक महान सनातनी सभ्यता है, जिसकी जड़ें हजारों वर्षों पुरानी हैं। ऋग्वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण, पुराण और स्मृतियाँ हमारे साँस्कृतिक आधारस्तंभ हैं। यहीं से ''वसुधैव कुटुंबकम्'' और ''सर्वे भवंतु सुखिनः'' जैसे महान विचार जन्म लेते हैं। यदि हम इतिहास को देखें, तो भारत में वैदिक काल से ही हिंदू सँस्कृति का वर्चस्व रहा है।**

# हिन्दू आस्था का प्रबल प्रवाह
## श्रद्धालु सँख्या होगी 50 करोड़ के पार: महाकुंभ 2025

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

आरम्भ में यह आकलन किया गया था कि लगभग 40 करोड़ श्रद्धालु 45 दिवसीय महाकुम्भ में त्रिवेणी में डुबकी लगायेंगे, किन्तु अभी महाकुम्भ के 29 दिन ही व्यतित हुए हैं और श्रद्धालुओं की सँख्या लगभग 44 करोड़ हो चुकी है। अभी माघी पूर्णिमा की महत्वपूर्ण तिथि आना शेष है। इस दिन हो सकता है कि 6–7 करोड़ श्रद्धालु त्रिवेणी में डुबकी लगायें। ऐसा ही जन ज्वार 26 फरवरी 2025 को महाशिवरात्री पर भी उमड़ सकता है, क्योंकि अधिक वय के लोग ठंढ़ा कम होने की राह देख रहे हैं। ऐसे लोग उस दिन भी बड़ी सँख्या में प्रयागराज आ सकते हैं। जिन राज्यों में ठंढ़क कम होती है, वहाँ के लोगों की भी प्रयाग यात्रा उन दिनों अधिक होगी। विश्व में केवल दो ही देश हैं, जिनकी जनसँख्या 50 करोड़ से अधिक है– भारत और चीन। अर्थात जनसँख्या क्रम के अनुसार सोचें, तो विश्व की तीसरे नम्बर की जनसँख्या महाकुम्भ में स्नान कर चुकी होगी। यह इतनी बड़ी सँख्या है, जितनी बड़ी सँख्या दुनियाँ में किसी भी धार्मिक आयोजन में एकत्र नहीं होती है। 2024 में हज में 1 करोड़ 30 लाख लोग पहुँचे थे, जबकि वेटिकन के सेंट पीटर्स स्क्वायर में केवल 80,000 लोगों के रुकने की व्यवस्था है। महाकुम्भ वाली सँख्या के समायोजन की क्षमता विश्व के बहुत से देशों के पास नहीं है। विशेष बात यह भी है कि महाकुम्भ हो या अर्दधकुम्भ लोग बिना बुलाये आते हैं, बिना निमंत्रण के आते हैं।

### अभी तक की श्रद्धालु सँख्या

महाकुंभ का समापन 26 फरवरी (महाशिवरात्रि) को होगा। मेला अधिकारियों का मानना है कि तब तक श्रद्धालुओं की सँख्या 50 करोड़ (500 मिलियन) को पार कर सकती है।

- ❖ मकर संक्रांति (14 जनवरी) – 3.5 करोड़ लोगों ने डुबकी लगाई।
- ❖ मौनी अमावस्या (29 जनवरी) – अब तक का सबसे बड़ा स्नान, 8 करोड़ श्रद्धालुओं ने स्नान किया।
- ❖ बसंत पंचमी (3 फरवरी) – 2.57 करोड़ लोगों ने संगम में स्नान किया।
- ❖ पौष पूर्णिमा (25 जनवरी) को 1.7 करोड़ और
- ❖ 30 जनवरी व 1 फरवरी को 2 करोड़ से अधिक श्रद्धालु संगम में डुबकी लगा चुके हैं।

महाकुंभ में अब तक 40.68 करोड़ श्रद्धालुओं ने संगम में पवित्र स्नान किया है। महाकुम्भ का आरम्भ हुआ 13 जनवरी 2025 से और कुम्भ का अंतीम स्नान होगा 26 फरवरी 2025 की शिवरात्री को।

### कुम्भ में सुविधाएँ

इस बार का प्रयागराज का महाकुंभ मेला लगभग 4000 हेक्टेयर भूमि पर फैला है और इसे 25 सेक्टरों में बांटा गया है। यूपी सरकार ने महाकुंभ मेला परिक्षेत्र को राज्य का 76वां जिला घोषित किया है। मेले में आकस्मिक घटनाओं से निपटने और श्रद्धालुओं को त्वरित चिकित्सा सुविधाएँ प्रदान करने के लिए प्रत्येक सेक्टर में एक केन्द्रीय अस्पताल के अलावा 20 बिस्तरों वाला एक केन्द्रीय

अस्पताल भी बनाया गया है। महाकुंभ के लिए प्रशासन ने संगम तट पर कुल 41 घाट तैयार किए हैं। इनमें 10 पक्के घाट हैं, जबकि बाकी 31 घाट अस्थायी हैं। संगम घाट प्रयागराज का सबसे प्रमुख और महत्वपूर्ण घाट है। महाकुंभ की यात्रा आसान करने के लिए रेलवे ने 3000 विशेष ट्रेनें शुरू की हैं। ये ट्रेनें 13 हजार से अधिक फेरे लगाएंगी। प्रयागराज जंक्शन के अतिरिक्त 8 उप–स्टेशन बनाए गए हैं। मेला क्षेत्र में 10 लाख लोगों के रुकने की व्यवस्था की गई है। इसके आसपास 2000 कैंप की टेंट सिटी बनाई गई है। संगम के आसपास लोगों के ठहरने के लिए कुल 3000 बेड के रैन बसेरे बनाए गए हैं। इसके अलावा महाकुंभ जिले में कुल 204 गेस्ट हाउस, 90 धर्मशालाएँ हैं।

### सफाई अद्भुत

आपको जगह–जगह पर सफाई कर्मचारी दिखाई देते हैं, श्रद्धा से सफाई करते नजर आते हैं, कुछ सफाई का काम बता देने पर प्रेम पूर्वक सफाई का काम कर जाते हैं। कभी किसी कर्मचारी को आनाकानी करते या शिकायत की मुद्रा में नहीं देखा। सभी घाटों पर पर्याप्त सँख्या में पेशाब के संसाधन और शौचालय भी उपलब्ध हैं। घाटों के निकट महिलाओं के लिए पर्याप्त सँख्या में चेंजिंग रूम भी उपलब्ध कराये गए हैं। कुम्भ नगरी की एक–एक सड़क, एक–एक शिविर, चौक–चौराहा, घाट इतना स्वच्छ है, जितना स्वच्छ मैंने कभी किसी तीर्थ को, मेले को नहीं देखा।

### घाटों की सुरक्षा का पूर्ण प्रबन्ध

सभी घाटों पर प्लास्टिक के क्यूब्स को जोड़कर एक श्रृंखला सी बना दी गई है, जिससे श्रद्धालु गहरे पानी में न उतर सकें। गहरे पानी में अचानक अनजाने में चले जाने से डूबने का खतरा बना रहता है और स्नान के अनेक अवसरों पर लोगों के डूबने की घटनाएँ घटती रहती हैं। ऐसे अप्रिय घटनाओं से बचाव का पूरा यत्न किया है उत्तरप्रदेश के शासन ने, मेला प्रशासन ने।

### खोया–पाया शिविर

मेला प्रशासन ने हर सेक्टर में खोया–पाया शिविर बनाया है। लगातार घोषणाएँ भी होती रहती हैं। किसी का भी खोया हुआ सामान किसी को मिलता है, तो उन शिविरों में जमा करा सकते हैं। अपने खोये हुए सामान की जानकारी शिविर में जाकर दे सकते हैं। यह मेला की प्रशासन की उत्तम व्यवस्था है।

### भूले भटके महिलाओं और बच्चों का शिविर

मेले में भीड़ अधिक होने से लोग कई बार अपने परिजनों से बिछुड़ जाते हैं, भीड़ अधिक होने से बिछुड़े लोगों को खोजना आसान नहीं होता है। ऐसे भटके लोगों को खोजने के लिए हर सेक्टर में भूली–भटकी महिलाओं और बच्चों का शिविर बनाया गया है। लोग जब भी पुलिस को भटक जाने की बात बताते हैं, उनको भूले–भटके शिविर में पहुँचा दिया जाता है और लाउडस्पीकर से उनके नाम, पता और उनके परिजनों के नाम के साथ उनके वहाँ होने का उद्घोष किया जाता है, जिससे अपने परिजनों को खोजने में आसानी हो।

### सिर पर गठरी लिए पैदल चलते श्रद्धालु

अधिकांश लोग अपने सिर पर अपने कपड़ों से भरी गठरी/झोला/बैग लिए हुए धीमी गति से चलते हुए संगम की ओर बढ़ते हुए दिखाई देते हैं। कोई फैशन नहीं, कोई दिखावा नहीं, कोई तामझाम नहीं, साधारण, सरल, सहज, सामान्य रूप से आ रहे हैं लोग। अपने पुरे परिवार के साथ आ रहे हैं लोग, अपने वृद्ध माता–पिता को लेकर आ रहे हैं, छोटे बच्चों को लेकर आ रहे हैं, गोद के बच्चों को भी लेकर भी आ रहे हैं।

### युवाओं की बड़ी सँख्या सम्हाल रही धर्म ध्वजा

युवा बड़ी सँख्या में आ रहे हैं। विश्वविद्यालय के बच्चे बड़ी सँख्या में आ रहे हैं। श्रद्धालुओं की पंक्ति में आधे लोग युवा दिखाई देते हैं। हर हर गंगे, हर हर महादेव, जय श्रीराम के नारे चारों तरफ सुनाई देते हैं। स्नान कर के लौटते समय सभी के ललाट पर तिलक दिखाई देता है। बाबाओं के शिविर में प्रवचनों में भारी भीड़ दिखाई देती है, लोग धर्ममय व्यवहार में लीन दिखाई देते हैं। भारत का युवा जितनी सँख्या में कुम्भ में दिखाई दे रहा है, उससे प्रतित हो रहा है कि हिन्दू युवा अब अपने हाथों में धर्म ध्वजा थाम चुका है, धर्म की जय निश्चित है।

### गंगा–यमुना–सरस्वती और संगम का सम्मान

किसी को भी गंगा में वस्त्र धोते नहीं देखा। मैं जबसे प्रयागराज आया हूँ प्रतिदिन संगम या गंगा स्नान करता हूँ। किसी को भी धारा में कुछ भी अनुचित पदार्थ ईत्यादि बहाते नहीं देखा। फूल और पूजन सामग्री श्रद्धा से बहाते हैं, इनसे नदी का जल सुवासित और शुद्ध ही होता है। लोग प्रायः गंगा में पैर रखने से पुर्व गंगा माता को प्रणाम करते हैं, सिर भूमि पर रखकर प्रणाम करते भी देखे जाते हैं। ऐसी श्रद्धा शायद ही भारत के बाहर किसी ने देखी हो, यह अलौकिक है, अद्भुत है।

### कदम–कदम पर भंडारे

रेलवे स्टेशन के आसपास, बस अड्डों के आसपास, कुम्भ नगरी में अंदर आने–जाने के मार्गों पर अनेक भंडारे चलाये जा रहे हैं। हर शिविर में भंडारे चल रहे हैं, सभी लोग अपनी शक्ति अनुसार भंडारे चला रहे हैं। लोग आग्रह कर–कर के भोजन प्रसाद खिला रहे हैं। निःशुल्क चाय पिलाने के सैकड़ों स्टाल चलाये जा रहे हैं, दिल्ली के झंडेवालान माता मंदिर के ही 16 से अधिक चाय प्रसाद के स्टाल लगाये गए हैं।

### कल्पवासियों की बड़ी सँख्या

मेला क्षेत्र में लगभग सभी शिविरों में बड़ी सँख्या में कल्पवासी निवास कर रहे हैं। तीर्थों में देश में कई स्थानों पर कल्पवास का विधान है। उसमें सबसे अधिक लोग प्रयागराज में कल्पवास करते हैं। यहाँ प्रतिवर्ष माघ मास में कल्पवास करने लोग आते हैं। कुम्भ में विशेष कल्पवास होता है। कहा जाता है कि कुम्भ में, प्रयाग में, तीर्थों में एक मास पर्यंत नियम पूर्वक निवास करने से एक कल्प तक स्वर्ग में निवास करने का पुण्य प्राप्त होता है, इसीलिए इस साधनापूर्वक तीर्थवास को कल्पवास कहते हैं।

### कल्प क्या है?

७१ चतुर्युगी का एक मन्वन्तर होता है और १४ मन्वन्तर/१०००चतुरयुगी का एक कल्प होता है। युगों की अवधि इस प्रकार है – सत्युग १७,२८,००० वर्ष, त्रेता १२,९६,००० वर्ष, द्वापर ८,६४,००० वर्ष और कलियुग ४,३२,००० वर्ष। अतएव एक कल्प १००० चतुर्युगों के बराबर

यानी चार अरब बत्तीस करोड़ (4,32,00,00,000) मानव वर्ष का हुआ। ब्रह्मा के एक मास में तीस कल्प होते हैं, जिनके अलग–अलग नाम हैं, जैसे श्वेतवाराह कल्प, नीललोहित कल्प आदि। प्रत्येक कल्प के १४ भाग होते हैं और इन भागों को 'मन्वंतर' कहते हैं। प्रत्येक मन्वंतर का एक मनु होता है, इस प्रकार स्वायंभुव, स्वारोचि आदि १४ मनु हैं। प्रत्येक मन्वंतर के अलग–अलग सप्तर्षि, इंद्र तथा इंद्राणी आदि भी हुआ करते हैं। इस प्रकार ब्रह्मा के आज तक ५० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, ५१वें वर्ष का प्रथम कल्प अर्थात् श्वेतवाराह कल्प प्रारंभ हुआ है। वर्तमान मनु का नाम "वैवस्वत मनु" है और इनके २७ चतुर्युगी बीत चुके हैं, २८ वें चतुर्युगी के भी तीन युग समाप्त हो गए हैं, चौथे अर्थात् कलियुग का प्रथम चरण चल रहा है। इस कलियुग के 5125 वर्ष व्यतित हो चुके हैं और यह 5126वाँ वर्ष चल रहा है।

**मोक्ष के लिए करते हैं संगम में कुम्भ स्नान**

इस त्रिवेणी संगम में स्नान करने से जन्म–जन्मान्तर के पापों से मुक्ति मिलती है, जीवन–मरण के चक्र से मुक्ति मिलती है और मोक्ष प्राप्त होता है। यह स्नान कुम्भ में करने से अपार पुण्यफल प्राप्त होता है। महाकुम्भ में स्नान का फल तो अप्रतिम है, वर्णन से परे है। स्वर्ग में अनंत काल तक वास का स्थान दिलाने में सक्षम है कुम्भ का स्नान।

**प्रयागराज का हर घाट संगम ही है**

जहाँ नदी का संगम होता है उससे दस किलोमीटर पहले का प्रवाह क्षेत्र और दस किलोमीटर बाद का प्रवाह क्षेत्र सब संगम ही कहलाता है। एक उदाहरण से समझने में आसानी होगी, यमुना और चम्बल का मिलन इटावा जिले के मुरादगंज के पास होता है, उससे नौ किलोमीटर के बाद यमुना में तीन नदियाँ एक साथ मिलती हैं– पहुंज, कुंवारी और सिंध। किन्तु इस संगम को पंचनदा कहा जाता है। यह पंचनदा शास्त्रों में वर्णित है। इससे स्पष्ट होता है कि जहाँ पवित्र नदियाँ मिलती हैं, केवल वही बिन्दू संगम नहीं होता है, बल्कि उसके दस किलोमीटर आगे–पीछे का पूरा परिक्षेत्र संगम होता है। इसीलिए आप प्रयागराज अवश्य आयें और जहाँ अवसर मिले, वहीं स्नान करें। इन पवित्र नदियों की प्रयागराज स्थित धारा का एक–एक इंच क्षेत्र संगम ही है। और हर जगह पर स्नान का एक बराबर ही फल मिलेगा। गंगा सर्वत्र पवित्र है, प्रयागराज भी सर्वत्र पवित्र है, कुम्भ भी सम्पूर्ण प्रयाग में व्याप्त होता है। अतः केवल संगम नोज पर जाने की होड़ न लगाकर कहीं भी स्नान करें और समान प्रभाव का पुण्य प्राप्त करें।

murari.shukla@gmail.com

# विहिप महाकुंभ शिविर में बौद्ध सम्मेलन का आयोजन

27 जनवरी 2025 को महाकुंभ में विश्व हिंदू परिषद के शिविर, सेक्टर 18, में बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदू और बौद्ध धर्म की एकता पर विशेष चर्चा हुई। सम्मेलन की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई, जिसमें परम श्रद्धेय कुंदलिंग रिंपोचे (परम पावन दलाई लामा के आचार्य), आका रिंपोचे त्सारिंग चाइजी (गंदेन चोसलिंग मठ, कर्नाटक), श्रद्धेय धम्मपिय भंते, गेशे डोंडुप (अभध्यिक्ष, बोमडिला मठ, अरुणाचल प्रदेश) तथा गेशे लामा छेपेल जोटपा (बौद्ध विशेष संगम के आयोजक) सहित कई बौद्ध धर्माचार्य उपस्थित रहे। सम्मेलन के प्रस्ताविक भाषण में विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय महामंत्री संगठन मिलिंद परांडे जी ने कहा, "भारत की धार्मिक परंपरा में सनातन संस्कृति अनेक पंथों को समाहित करने वाली रही है। भगवान बुद्ध की शिक्षाएँ भी हिंदू समाज का अभिन्न अंग हैं। बुद्ध ने आत्मप्रदीपन (अप्प दीपो भव) का संदेश दिया, जो हिंदू साधना पद्धति में भी निहित है। बौद्ध धर्म की करुणा और अहिंसा की अवधारणा हिंदू धर्म के मूलभूत सिद्धांतों से जुड़ी हुई है। उन्होंने यह भी कहा कि "बौद्ध धर्म

और हिंदू समाज की एकता किसी मत–वैभिन्य का नहीं, बल्कि सह– अस्तित्व और साँस्कृतिक एकता का प्रतीक है। बौद्ध धर्म के संत–परंपरा, संन्यास, ध्यान और मूर्तिपूजा जैसे तत्व हिंदू परंपरा के समान ही हैं। बौद्ध समाज ने श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन से लेकर हिंदू समाज की एकता में प्रारंभ से ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

परम श्रद्धेय कुंदलिंग रिंपोचे, परम पावन दलाई लामा के आचार्य, ने अपने संबोधन में कहा, "हिंदू और बौद्ध परंपराएँ अहिंसा, करुणा और आत्मबोध के माध्यम से मानवता को जोड़ने का कार्य करती हैं। इन मूल्यों को अपनाकर विश्व में शांति और सह–अस्तित्व की भावना को प्रोत्साहन दिया जा सकता है। साधना और अनुशासन के माध्यम से धर्म का प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए, जिससे आध्यात्मिक चेतना का विस्तार हो। कार्यक्रम में उपस्थित विद्वानों और धर्माचार्यों ने इस बात पर बल दिया कि हिंदू और बौद्ध परंपराओं के बीच सह–अस्तित्व और आध्यात्मिक समन्वय से न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में शांति और करुणा का संदेश फैलाया जा सकता है।

इस अवसर पर विहिप के केंद्रीय सह महामंत्री संगठन विनायक राव देशपांडे जी, संयुक्त महामंत्री, विश्व हिन्दू परिषद कोटेश्वर शर्मा जी सहित अनेक बौद्ध भिक्षु और धर्माचार्य उपस्थित रहे। विशेष रूप से अरुणाचल प्रदेश के टूटिंग और तवांग संप्रदाय से आए लामा एवं भंते भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। इसके अलावा, विदेशों से पधारे कई बौद्ध भिक्षुओं ने भी हिंदू–बौद्ध एकता को लेकर अपने विचार साझा किए।

# हमारी हिन्दू सँस्कृति, एकत्व भाव का प्रतिबिम्ब है कुंभ मेला

डॉ. प्रवेश कुमार

**हमारे हिन्दू समाज के निमित्त मनाए जाने वाले त्योहार, उत्सव एवं कुछ विशेष अवसरों पर मेलों का आयोजन होना, यह सभी हमें हमारे मूल से जोड़े रखती है। हमारा मूल कुछ और नहीं हिन्दुत्व जीवन दर्शन है, जो सभी के कल्याण, उनकी उन्नति, प्रगति यह कल्याण मानव मात्र को ऐसा भी हम नहीं सोचते बल्कि प्रत्येक हिन्दू कहता है कि विश्व का कल्याण हो। दूर-सुदूर भी कोई राष्ट्र होगा, वहाँ भी हमारी जैसी मानव सभ्यता होगी, उसमें रहने वाले लोगों का भी कल्याण हो, इस संकल्पना को लेकर ही तो हम सर्वे भवन्तु सुखिना: का मंत्र जपते रहते हैं।**

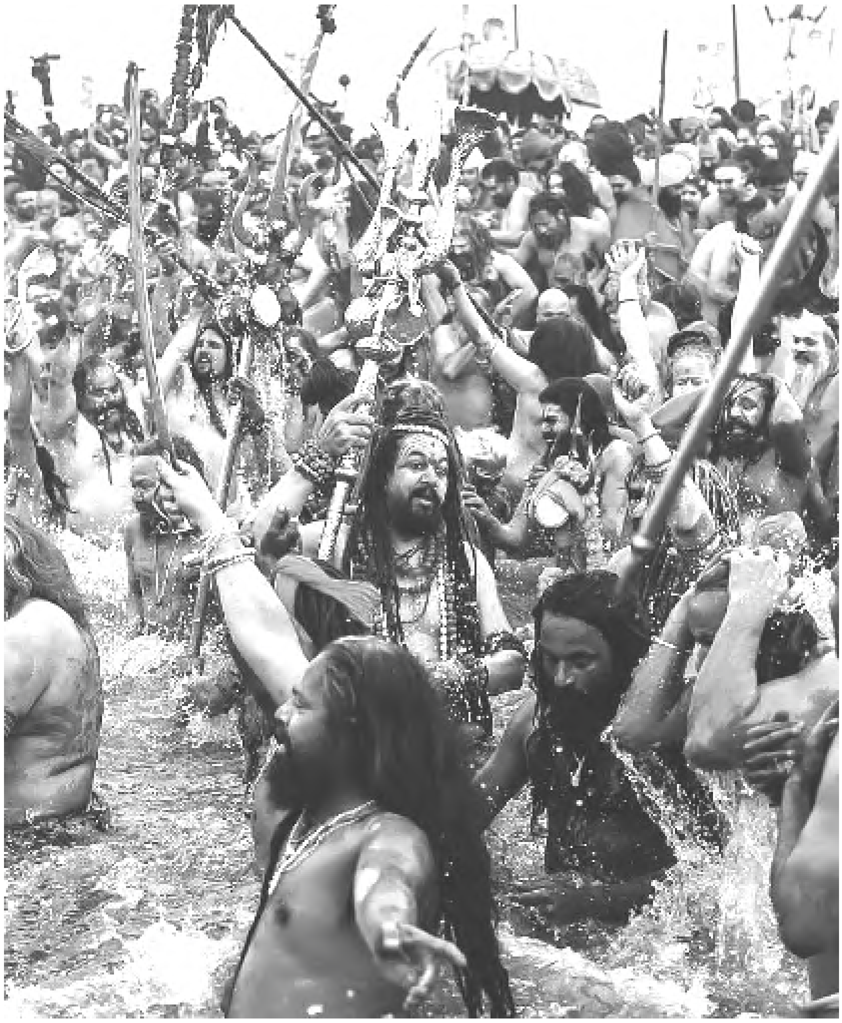

हमारी हिन्दू सँस्कृति, एकत्व भाव का प्रतिबिम्ब है कुंभ मेला। वर्ष 2025 की 13 जनवरी से प्रारंभ हुआ महाकुंभ मेला इन दिनों विश्व में चर्चा का विषय बना हुआ है। हिंदू जीवन दर्शन पर पुनः चर्चा, विमर्श हो रहा है। देश के साथ–साथ विदेशों से आने वाले हिन्दू धर्म के अनुयायी भारी सँख्या में प्रयागराज आ रहे हैं।

सोशल मीडिया में हिन्दू संतों के व्याख्यान से लेकर शाही स्नान की खूब चर्चा है। कुंभ मेला जिसकी परंपरा हजारों वर्षो पुरानी है। हमारे वेद यजुर्वेद एवं अथर्ववेद तथा पुराण में इसका वर्णन है, वहीं 6वीं शताब्दी में चीनी लेखक ह्वेन–त्सांग ने अपनी यात्रा वृत्तांत में भी कुंभ का वर्णन किया है। वे कहते–लिखते हैं कि 'गंगा में हर 6 सालों में लोग स्नान करने आते हैं, मेला होता है, राजा हर्षवर्धन द्वारा कुंभ मेले की व्यवस्था आदि को लेकर भी उन्होंने लिखा है।' यह मेले भारत की सनातन हिंदू सँस्कृति का प्रदर्शन तो करते ही हैं, साथ ही भाषा, बोली, खान–पान, वेष–भूषा की विविधिता के साथ एकात्म तत्व का दर्शन भी कराते हैं।

कुंभ मेलों का हम तीन क्रम समझ सकते हैं–एक महाकुंभ मेला है, जो 144 वर्षों में आता है, वहीं पूर्ण कुंभ प्रत्येक 12 वर्षों में मनाया जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक 6 वर्ष में अर्ध–कुंभ होता है। पूर्ण कुंभ और अर्ध कुंभ के स्थान में परिवर्तन होता रहता है, जैसे हरिद्वार, नासिक, प्रयाग, उज्जैन। लेकिन प्रत्येक 144 वर्षों में होने वाले महाकुंभ का स्थान प्रयागराज ही होता है। इस वर्ष 2025 में हो रहा महाकुंभ 144 वर्षो बाद प्रयागराज में हो रहा है, यह एक संयोग है कि हम इस महाकुंभ के साक्षी बनेंगे। शास्त्रों के अनुसार कुंभ और महाकुंभ यह ''अमृत कलश'' से लिया गया है। इसके पीछे की एक कहानी है कि देव और असुरों के बीच समुंद्र मंथन हुआ, उसी से अमृत कलश निकला, जिसको प्राप्त करने का संघर्ष भी दोनों में हुआ। उसी में अमृत कलश की कुछ बूंदे प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में गिरीं। तभी से यह कुंभ भी प्रारंभ हुआ। इसी कुंभ में हिन्दू समाज के विशाल स्वरूप का भी दर्शन होता है। हम सभी को विदित ही है कि हिन्दू धर्म के भीतर कितने सारे छोटे–बड़े मत, पंथ, संप्रदाय हैं, सभी अपनी मूल वैदिक सनातन हिन्दू सँस्कृति को मानते हैं। इसलिए एकता में विविधिता का नाम ही हिन्दू है, भारत है। अलग–अलग हमारी सँस्कृति, हमारी

विरासत 'एकम सत् विप्रा बहुदा वदन्ति' के दर्शन को मनाती है।

इसी दर्शन का पालन कुंभ में होता है। आद्य शंकराचार्य ने कुंभ मेलों में हिंदू समाज के संतों के अखाड़ों को जोड़कर ''दशनामी अखाड़ा परम्परा'' को प्रारम्भ किया। यह दशनामी अखाड़ा जिसमें संतों के विभिन्न अखाड़ों को सम्मलित किया गया (1) गिरी (2) पूरी (3) भारती (4) तीर्थ (5) वन (6) अरण्य (7) पर्वत (8) आश्रम (9) सागर (10) सरस्वती।

इन सभी अखाड़ों को शंकर ने चार प्रमुख पीठ, मठ के साथ जोड़ा, जिसमें (1) द्वारिका पीठ—तीर्थ एवं आश्रम दोनों को जोड़ा गया। (2) ज्योतिष मठ—गिरी, पर्वत, सागर वहीं (3) गोवर्धन मठ वन, पुरी, अरण्य एवं (4) श्रृंगेरी पीठ—सरस्वती, तीर्थ, अरण्य, भारती। दशनामी अखाड़ा को लेकर जदूनाथ सरकार ने अपनी पुस्तक दशनामी नागा सन्यासियों को इतिहास के अध्याय चार में दशनामी अखाड़ा पर कुछ इतिहास आदि की बात की है। इसी में वह लिखते हैं कि किस प्रकार से ब्रिटिश भारत में दशनामी अखाड़े ने ईसाईयों द्वारा किए जा रहे 'कन्वर्जन' को लेकर जन जागरण का काम किया। हम सभी को यह विदित ही है कि अठारहवीं शताब्दी के अंत में अँग्रेजी शासन के विरुद्ध बंगाल में योगी, नाथ, गिरी, पुरी, गोस्वामी, दशनामी तथा आद्य शंकराचार्य के समर्थक, अनुयायियों आदि ने किसानों को जागृत कर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था, जिसे इतिहास में सन्यासी विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है। जिसे बंकिम चट्टोपाध्याय ने आंनद मठ नामक अपने उपन्यास में उद्धृत किया है।

भारत की आध्यात्मिक चेतना को जन—जन तक पहुँचाने का कार्य हमारे साधु—संत, हमारे मंदिर, हमारे मठ, हमारे उत्सव एवं हमारे होने वाले मेले आदि ही करते हैं। कुंभ में अखाड़ों की परम्परा है। इन अखाड़ों में शास्त्रधारी और शस्त्रधारी दो प्रकार के विभाजनों को भी इंगित किया गया है। अखाड़ों के अपने नियम, संहिता जो अधिक कठोर होती है, जिनका पालन करना, अखाड़े के सभी सदस्यों के लिए अनिवार्य होता है। इन्हीं नियमों से यह नियंत्रित होते हैं, इनका जीवन सादगीपूर्ण, अनुशासित और आध्यात्मिक अभ्यास और मानव कल्याण में अग्रसर रहते हुए मोक्ष प्राप्त करने का अंतिम लक्ष्य होता है। हिन्दू समाज का समागम ही कुंभ है, के साथ हमारी हिन्दू सँस्कृति, इसकी विशालता, इस विशालता में विविधिता और इसी विविधिता में एकत्व तत्व जिसे हम हिन्दुत्व कहते हैं। इस हिन्दुत्व की अस्मिता जिसने सभी विविध तत्व के साथ हमारी विशाल हिन्दू सँस्कृति को समेटे रखा है।

हमारे हिन्दू समाज के निमित्त मनाए जाने वाले त्योहार, उत्सव एवं कुछ विशेष अवसरों पर मेलों का आयोजन होना, यह सभी हमें हमारे मूल से जोड़े रखती है। हमारा मूल कुछ और नहीं हिन्दुत्व जीवन दर्शन है, जो सभी के कल्याण उनकी उन्नति, प्रगति यह कल्याण मानव मात्र को ऐसा भी हम नहीं सोचते, बल्कि प्रत्येक हिन्दू कहता है विश्व का कल्याण हो, दूर—सुदूर भी कोई राष्ट्र होगा, वहाँ भी हमारी जैसी मानव सभ्यता होगी, उसमें रहने वाले लोगों का भी कल्याण हो, इस संकल्पना को लेकर ही तो हम सर्वे भवन्तु सुखिनः का मंत्र जपते रहते हैं।

गाय माता की जय, पृथ्वी माता की जय, चरा—चर प्रकृति और जन—जानवरों तक तो हिन्दु जय करता है। जो मुझमें है वही तुम में भी है, यही मंत्र तो सनातन से हिन्दू लिए चला आ रहा है। इसीलिए है भेद बहुतेरे तो क्या ? पूर्वज सबके हिन्दू हैं, सँस्कृति अपनी एक चिरंतन, खून रगों में हिन्दू है। यह हिन्दू पहचान जिसने गुलामी के कालखंड में भी हमें बचाए रखा, हमारे हिन्दू त्योहार, उत्सव, हमारे मेले, हमारी यात्राएँ यह सभी प्रशासनिक अधीनता के कालखण्ड में भी चलते रहे। हमने इनको मानने के लिए भी जजिया जैसा कर दिया, लेकिन अपनी हिन्दू अस्मिता को संजोए रखा। वर्षों, सदियों की परम्परा में रचा—बसा कुंभ मेला हमारी सनातन हिन्दू सँस्कृति के समरस भाव को व्यक्त करती है, साथ ही साथ किस प्रकार हिन्दू अपनी विविधिता का आनंद लेता है। हम हिन्दू एकता में विविधिता का आनन्द लेते हैं, यह अवस्था कोई जबरन की नहीं है, बल्कि यह स्वयं से है।

# विहिप मुख्यालय में ७६वाँ गणतन्त्र दिवस मनाया गया

नई दिल्ली। प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय कार्यालय, संकट मोचन आश्रम, रामकृष्णपुरम, सेक्टर—6, नई दिल्ली में 26 जनवरी, 2025 को प्रातः 09.00 बजे 76वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह आयोजित किया गया। वरिष्ठ प्रचारक श्री धर्मनारायण शर्मा जी ने ध्वजारोहण किया, राष्ट्रगान के बाद बच्चों ने देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति दी। तत्पश्चात् श्री धर्मनारायण शर्मा जी ने गणतंत्र दिवस और भारत के संविधान के संदर्भ में संबोधित किया।

कार्यक्रम में विहिप के केन्द्रीय मंत्री सर्वश्री अजेय पारिक जी (प्रमुख— सेवा), सुधांशुमोहन पटनायक जी (प्रमुख— धर्मप्रसार), दिनेश उपाध्याय जी (प्रमुख— गौरक्षा), वीरेन्द्र शर्मा जी (प्रमुख— वनवासी रक्षा परिवार फाउण्डेशन), बजरंग दल के राष्ट्रीय संयोजक नीरज दौनेरिया जी, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस फोर्स तथा दिल्ली पुलिस के जवानों सहित कार्यालय परिसर में निवासरत कार्यकर्ता परिवार सहित सहभागी हुए। दिल्ली पुलिस के एसएचओ श्री हंसराज मिश्रा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। जलपान आदि के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ।

# क्या अकबर ने कुंभ मेले की शुरुआत की थी?

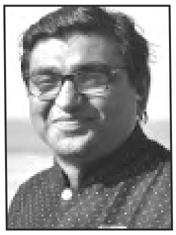

**पंकज जगन्नाथ जायसवाल**

वामपंथी पारिस्थितिकी तंत्र ने झूठे आख्यान गढ़ने में अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है, खास तौर पर हिंदू धर्म और उसकी सँस्कृति के खिलाफ। एक वीडियो में महाराष्ट्र के पत्रकार श्री निरंजन टाकले अकबर की महिमा का प्रचार करते हैं और दावा करते हैं कि कुंभ मेले की स्थापना उन्होंने ही की थी। ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़–मरोड़ कर पेश करना, वैज्ञानिक सत्यों की अनदेखी करना या 'तार्किक भ्रांति' और 'व्यक्तिवादी' तर्क वामपंथी पारिस्थितिकी तंत्र की कुछ खासियतें हैं। अगर कोई व्यक्ति या समूह मानवता के लिए कुछ अच्छा करता है, तो हम सभी को उसका आभारी होना चाहिए, चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, पंथ या संप्रदाय का हो। हालांकि स्वार्थी उद्देश्यों के लिए किसी खास समूह को संतुष्ट करने के लिए कहानी बनाना मानवता के खिलाफ है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ हिंदू त्योहारों, नकली इतिहासकारों और उनके नकली सिद्धांतों जैसे कि आर्यन आक्रमण सिद्धांत, रामायण, महाभारत आदि के बारे में नकली आख्यानों को वैज्ञानिक, पुरातात्विक, ऐतिहासिक संदर्भों, उपग्रह इमेजिंग, ब्रह्मांड संबंधी अध्ययनों और प्राचीन पुस्तकों के संदर्भ के साथ खारिज किया जा रहा है। वामपंथी इतिहासकारों को यह समझना चाहिए कि नकली आख्यान बनाने की उनकी क्षमता अब समाज द्वारा आसानी से स्वीकार नहीं की जाएगी। हर झूठी कहानी का जवाब संदर्भों के साथ दिया जा रहा है। यहाँ मैं आपको कुंभ मेले के बारे में जानकारी प्रदान करूँगा, ताकि यह मिथक दूर हो जाए कि कुंभ मेले की शुरुआत अकबर ने की थी। अधिकांश हिंदू त्योहारों के गहरे वैज्ञानिक और आध्यात्मिक अर्थ हैं, जिन्हें सभी को समझना चाहिए। मैंने कुंभ मेले के वैज्ञानिक घटकों पर भी चर्चा की है।

### प्राचीन उत्पत्ति और प्रारंभिक संदर्भ : युगों के माध्यम से कुंभ मेला

**ऋग्वेद और पाली धर्मग्रंथ – प्रारंभिक उल्लेख** – ऋग्वेद के पूरक ऋग्वेद परिशिष्ट में सबसे पहले कुंभ मेले के लिए एक प्रमुख स्थान प्रयाग का उल्लेख किया गया है। बौद्ध धर्म के पाली धर्मग्रंथ की तरह यह प्राचीन वैदिक साहित्य भी प्रयाग में पवित्र संगम में स्नान के महत्व पर जोर देता है। ये संदर्भ त्योहार के तीर्थयात्रा और अनुष्ठान स्नान के लंबे समय से चले आ रहे इतिहास को रेखांकित करते हैं, इसकी ऐतिहासिक जड़ों पर जोर देते हैं।

**महाभारत और पौराणिक संदर्भ** – भारत के महान महाकाव्यों में से एक महाभारत भारतीय सँस्कृति में महाकुंभ मेले के महत्व पर जोर देता है। यह प्रयाग स्नान तीर्थयात्रा को एक तरह के प्रायश्चित और शुद्धिकरण के रूप में चित्रित करता है, एक परंपरा जो प्राचीन भारत की आध्यात्मिक सँस्कृति में दृढ़ता से समाहित थी। महाभारत और अन्य पौराणिक लेखन में ये संकेत कुंभ मेले को आकार देने वाले प्रारंभिक धार्मिक और साँस्कृतिक अनुष्ठानों की अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

**पुराणों में कुम्भ का विस्तार से वर्णन है** – इसी तरह का वर्णन स्कंद पुराण और पद्म पुराण में मिलता है। पद्म पुराण में कहा गया है कि "पृथिव्यां कुम्भयोगस्य चतुर्धा भेद उच्चते। चतु:स्थले नितनात् सुधा कुम्भस्थ भूतले।। चन्द्र प्रस्रवणा रक्षां सूर्यों विस्फोटनात् दधौ। दैत्येभ्यश्च गुरु रक्षां सौरिदेवेंद्रजात् भयात।।" इसका मतलब है कि पृथ्वी पर चार प्रकार के कुंभ योग हैं। अमृत हर समय चार स्थानों पर

बहता है। यहाँ सूर्य और चंद्रमा के माध्यम से सुरक्षा प्रवाहित होती है।

कुंभ के संबंध में स्कंद पुराण में कहा गया है, "माघे मासे गंगे स्नानं यः कुरुते नरः। युगकोटिसहस्राणि तिष्ठंति पितृदेवताः।।" अर्थात माघ माह में गंगा स्नान करने वाले व्यक्ति के पूर्वज स्वर्ग में निवास करते हैं। वहीं पद्म पुराण में कहा गया है, "त्रिषु स्थलेषु यः स्नायात् प्रयागे च पुष्करे। कुरुक्षेत्रे च धर्मात्मा स याति परमं पदम।।" इसका अर्थ है कि जो धर्मात्मा व्यक्ति प्रयाग, पुष्कर और कुरूक्षेत्र में स्नान करता है, वह परमधाम को जाता है।

गरुड़ पुराण में कहा गया है, "अग्निष्टोमसहस्राणि वाजपेयशतानि च। कुंभस्नानस्य कलां नार्हंते षोडशीमपि।।" (हजारों अग्निस्तोम और सैकड़ों वाजपेयी यज्ञ भी कुंभ स्नान के सोलहवें हिस्से के बराबर नहीं हैं।) ब्रह्म–वैवर्त पुराण के अनुसार "प्रयागे माघमासे तु स्नात्वा पार्थिवमर्दनः। सर्वपापैः प्रमुच्येत पितृभिः सह मोदते।।" अर्थात माघ माह में प्रयाग में स्नान करने से मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है और उसके पितर प्रसन्न होते हैं।

अग्नि पुराण के अनुसार "कुंभे कुंभोद्भवः स्नात्वा प्रायच्छति हि मानवान। ततः परं न पापानि तिष्ठन्ति शुभकर्मणाम।।" अर्थात कुंभ में स्नान करने से पापों से मुक्ति मिलती है और पुण्य की प्राप्ति होती है। विष्णु पुराण के अनुसार 'अयं कुंभः परं पुण्यं स्नानं येन कृतं शुभम्। सर्वपापक्षयं याति गच्छते विष्णुसन्निधिम।।' अर्थात कुंभ में स्नान करना अत्यंत पवित्र है और व्यक्ति विष्णु लोक को जाता है।

इस बीच श्रीमद्भागवत पुराण कहता है "तत्रापि यः स्नानकृत् पुण्यकाले। गंगा जलं तीर्थमथाधिवासम।। पुण्यं लभेत् कृतकृत्यः स गत्वा। वैकुण्ठलोकं परमं समेति।।" अर्थात जो मनुष्य पुण्य काल में गंगा स्नान करता है, उसे पुण्य प्राप्त होता है और वह बैकुंठ धाम को जाता है। महाभारत के वन पर्व में कहा गया है, "त्रिपुरं दहते यज्ञः स्नानं तीर्थं तु दहते।" सर्वपापं च तीर्थे स्नात्वा सर्वं भवति शुद्धये।।'

इसका तात्पर्य यह है कि यज्ञ से तीनों लोक पवित्र हो जाते हैं, लेकिन तीर्थ में स्नान करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और व्यक्ति पूरी तरह से शुद्ध हो जाता है। कूर्म पुराण में कहा गया है कि कुंभ में स्नान करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। कुंभ में पापों का नाश करने और स्नान को फलदायी बनाने के लिए पाप न करने का संकल्प भी लेना चाहिए।

**ह्वेन त्सांग के (7वीं शताब्दी) अवलोकन** – चीनी बौद्ध तीर्थयात्री ह्वेन त्सांग की 7वीं शताब्दी की रिपोर्ट कुंभ मेले के सबसे पुराने ऐतिहासिक इतिहासों में से एक है। हिंदू शहर प्रयाग के उनके विवरण, जिसमें कई मंदिर और धार्मिक प्रथाएँ, जैसे नदी के संगम पर स्नान, त्योहार के शुरुआती इतिहास में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। उनके अवलोकन से पता चलता है कि यह एक संपन्न आध्यात्मिक केंद्र था, जिसने हर जगह से तीर्थयात्रियों और धार्मिक अनुयायियों को आकर्षित किया। अंत में ये प्राचीन शास्त्र और ऐतिहासिक इतिहास भारतीय धार्मिक और सॉंस्कृतिक इतिहास में महा कुंभ मेले के गहन महत्व की एक विशद तस्वीर प्रदान करते हैं। वे यह समझने के लिए आधार तैयार करते हैं कि कैसे यह विशाल उत्सव वर्षों में विकसित हुआ है, बदलते समय के साथ अपने आध्यात्मिक सार को संरक्षित करते हुए।

**चीनी बौद्ध तीर्थयात्री ह्वेन त्सांग की 7वीं शताब्दी की रिपोर्ट कुंभ मेले के सबसे पुराने ऐतिहासिक इतिहासों में से एक है। हिंदू शहर प्रयाग के उनके विवरण, जिसमें कई मंदिर और धार्मिक प्रथाएँ, जैसे नदी के संगम पर स्नान, त्योहार के शुरुआती इतिहास में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। उनके अवलोकन से पता चलता है कि यह एक संपन्न आध्यात्मिक केंद्र था, जिसने हर जगह से तीर्थयात्रियों और धार्मिक अनुयायियों को आकर्षित किया।**

**तुलसीदास की रामचरितमानस और मुस्लिम इतिहासकारों के विवरण** – महाकुंभ मेले के इतिहास में 16वीं शताब्दी एक महत्वपूर्ण क्षण था। तुलसीदास द्वारा रचित हिंदू महाकाव्य 'रामचरितमानस' में प्रयाग में होने वाले वार्षिक मेले का वर्णन किया गया है, जिसमें हिंदू सँस्कृति में इसके महत्व पर जोर दिया गया है। इसी तरह उसी शताब्दी के एक मुस्लिम इतिहासकार के विवरण 'आइन–ए–अकबरी' में प्रयाग को हिंदुओं के लिए 'तीर्थों का राजा' बताया गया है, खासकर माघ महीने के दौरान। ये कई आख्यान भारत की विभिन्न सँस्कृतियों में त्योहार की व्यापक मान्यता और भक्ति को प्रदर्शित करते हैं।

**महाकुंभ मेले के कुछ वैज्ञानिक तत्व इस प्रकार हैं** – कुंभ मेला वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित दुनियाँ का सबसे बड़ा धार्मिक और साँस्कृतिक

समागम है। खगोल विज्ञान के अनुसार अर्ध कुंभ, पूर्ण कुंभ और महाकुंभ तब आयोजित किए जाते हैं, जब ग्रह और तारे एक विशिष्ट स्थिति में होते हैं। हालाँकि कुंभ के बारे में पहला लिखित ज्ञान चीनी यात्री ह्वेन त्सांग की यात्रा कथाओं में पाया जा सकता है, लेकिन धार्मिक शिक्षाओं में इसे ब्रह्मांड की शुरुआत माना जाता है।

महाकुंभ मेला एक ऐसा उत्सव है जिसमें विज्ञान, ज्योतिष और अध्यात्म का समावेश होता है। महाकुंभ की तिथियों की गणना वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग करके की जाती है, जिनमें से अधिकांश ग्रहों की स्थिति का उपयोग करते हैं। जब बृहस्पति ग्रह ज्योतिषीय राशि वृषभ में प्रवेश करता है, तो यह सूर्य और चंद्र के मकर राशि में प्रवेश के साथ मेल खाता है। ये परिवर्तन जल और वायु को प्रभावित करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप प्रयागराज के पवित्र शहर में पूरी तरह से सकारात्मक वातावरण बनता है। उस पवित्र स्थल पर जाकर और गंगा में पवित्र डुबकी लगाकर आध्यात्मिक रूप से आत्मा को प्रबुद्ध किया जा सकता है, जिससे शारीरिक और मानसिक तनाव कम हो सकता है, ऐसा माना जाता है।

**ज्योतिष** – यह उत्सव तब मनाया जाता है, जब सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति कुछ निश्चित स्थितियों में होते हैं।

**नदी संगम** – यह आयोजन नदी संगम पर होता है, जहाँ सौर चक्र में विशिष्ट अवधियों में अद्वितीय शक्तियाँ कार्य करती हैं।

**जल** – माना जाता है कि यह आयोजन जलमार्गों के ऊर्जा मंथन से जुड़कर शरीर (72 प्रतिशत जल) को लाभ पहुँचाता है। महा कुंभ मेला पूरे भारत से लोगों का एक विशाल जमावड़ा है, जो पवित्र गंगा नदी में स्नान करने आते हैं। यह आयोजन ज्ञान से भरा होता है और इसमें कई अनुष्ठान और साँस्कृतिक गतिविधियाँ शामिल होती हैं।

**निष्कर्ष** – महा कुंभ मेले की युगों से यात्रा इसके शाश्वत आध्यात्मिक और साँस्कृतिक महत्व को प्रदर्शित करती है। महा कुंभ मेला भारत के आध्यात्मिक जीवन में पवित्र पुस्तकों में इसके पहले उल्लेख से लेकर मध्ययुगीन और औपनिवेशिक युगों के दौरान इसके विकास और आधुनिक कठिनाइयों के प्रति इसके अनुकूलन तक एक महत्वपूर्ण आयोजन रहा है। कला, साहित्य और समाज पर इसका प्रभाव, आधुनिक नवाचारों और तार्किक कौशल के साथ मिलकर, त्योहार की गतिशील प्रकृति का उदाहरण है। सद्भाव, शांति और भक्ति का प्रतीक महाकुंभ मेला आस्था और परंपरा का प्रतीक बना हुआ है, जो भारतीय आध्यात्मिकता और सँस्कृति की समृद्ध झलक दर्शाता है।

pankajjayswal1977@gmail.com

# समरसता संगोष्ठी आयोजित

विश्व हिंदू परिषद, झुन्झुनूँ द्वारा वाल्मिकी पार्क जे.के. मोदी स्कूल के सामने कानूराम सारवाण की अध्यक्षता, छोटेलाल सारवाण एवं गणेश नारायण डुलगच के सान्निध्य में आयोजित समरसता संगोष्ठी में भारत माता, वाल्मिकी जी एवं डॉ. भीमराव अम्बेडकर के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम आयोजित किया गया। विहिप धर्मप्रसार प्रांत प्रमुख सीएम भार्गव ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि समरसता किसी भी जीवंत राष्ट्र की शिराओं में बहती रक्त रूपी जीवन रसता है। वैदिक काल में हमारे यहाँ वर्ण आधारित व्यवस्था थी लेकिन कालांतर में भारत भूमि पर विधर्मी आक्रांताओं द्वारा किए गए आक्रमण एवं लंबी पराधीनता के कारणों से कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था ने जन्म का आधार ले लिया तथा समाज में जन्मतः श्रेष्ठता का सिद्धांत प्रतिपादित हो गया। जो महत्व हमारे शरीर के हर अंग जीवन रसता अर्थात रक्त प्रवाह का है, जिसके समरूप से प्रवाहित होने से ही हम स्वस्थ रहते हुए परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सकते हैं, वही महत्व राष्ट्र में सामाजिक समरसता का है। पढ़ाई, दवाई व कमाई यानि शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक सुरक्षा का होना अनिवार्य है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक ये सुविधाएँ पहुँचे, तभी सामाजिक समरसता की सार्थकता है। जातिवाद, असमानता और छुआछूत जैसी बुराइयों से जड़ता से मुक्त होकर ही हम स्वस्थ, सजग और उन्नत राष्ट्र का निर्माण करने में सक्षम होंगे। इस अवसर पर विजेन्द्र हटवाल एवं विहिप जिला उपाध्यक्ष जयराज जांगिड ने अपने विचार रखें। मंच संचालन प्रांत धर्म प्रसार टोली सदस्य योगेन्द्र कुण्डलवाल ने किया एवं लक्ष्मीकांत डुलगच ने आभार व्यक्त किया।

bajrangdaljjn@gmail.com

# बौद्ध धर्म सनातन धर्म का ही अंग है

**मुरारी शरण शुक्ल**
सह सम्पादक हिन्दू विश्व


भगवान बुध ने सनातन धर्म का ही प्रचार किया, बौद्ध धर्म सनातन धर्म का ही अंग है। जब भगवान बुध को ज्ञान प्राप्त हुआ, तो ब्रह्मा जी ने उनको कहा कि आप अब परम ज्ञानी हो गए हो, अब आपको दुनियाँ में घुम–घुमकर ज्ञान का उपदेश करना चाहिए। ब्रह्मा जी की आज्ञा से ही भगवान बुध ने लोक भ्रमण आरम्भ किया, ज्ञानोपदेश देने लगे और जगत प्रसिद्ध हुए, इसीलिए हमलोग अपने पुजा और आयोजनों में ब्रह्मा जी का चित्र लगाते हैं। यह बताया गेशे लामा चोसफेल जोत्पा जी ने। उन्होंने आगे बताया कि वाणी की देवी सरस्वती की भी आराधना हम करते हैं, यह ज्ञान की देवता मानी जाती हैं, इसीलिए हम सरस्वती माता का भी चित्र लगाते हैं। बौद्ध धर्म में मंजूश्री भी ज्ञान की देवता हैं। शैलानामसुन दीर्घायु की देवता हैं। हमलोग शिवजी और कैलाश पर्वत का भी चित्र लगाते हैं प्रायः। बज्रपाणी शक्ति के देवता हैं। भगवान बुद्ध का एक स्वरूप आयुर्वेद की औषधियों के बुद्ध–मेडिसिन बुद्ध भी होता है। भगवान बुद्ध के जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का बारह लीलाओं के रूप में वर्णन का एक चित्र भी लगाया जाता है। तारा देवी का एक मंडल होता है, जिसमें देवी के एक्कीस विभिन्न स्वरूपों के चित्रों के मध्य में तारा देवी विराजमान होती हैं। मरीची देवता हिन्दू मान्यताओं के मारुति देवता के समतुल्य हैं। लामा जी ने बताया कि इनका चित्र लगाने से दुर्घटना नहीं होती है। शांति, ज्ञान और शक्ति के प्रतिक तीन देवताओं का चित्र एक ही साथ एक चित्र में लगाया हुआ था, आर्या अवलोकितेश्वरा, मंजूश्री और वज्रपाणी, इन तीन देवताओं का निवास स्थान कैलाश पर्वत में माना जाता है, इसीलिए कैलाश को पूजनीय माना जाता है और कैलाश के स्वामी शिवजी को भी पूजनीय माना जाता है। महासिद्धी नरोपा और तिलोपा की भी बहुत प्रतिष्ठा है बौद्ध धर्म में, मिलारेपा को भी बहुत सिद्ध माना जाता है, ये तीनों वज्रयान परम्परा के माध्यम से एक ही जन्म में तांत्रिक रूप से सिद्ध हो चुके महापुरूष हैं। नालन्दा विश्वविद्यालय के 17 आचार्यों का भी चित्र लगा हुआ था बौद्ध शिविर में। उन्होंने बताया कि नालन्दा विश्वविद्यालय में दस हजार प्रोफेसर थे और पचास हजार विद्यार्थी थे।

### करूणा के देवता गणेश जी

प्रथम पूज्य देवता गणेश जी का भी चित्र लगाते हैं, भगवान गणेश को बौद्ध धर्म में करूणा के रूप में, आर्यावलोकित ईश्वर का दूसरा स्वरूप गोपुक्षाक्टुक अर्थात् धर्म की रक्षा करने वाले भगवान के सहायक के रूप में जाना जाता है।

### बौद्ध धर्म में चार सम्प्रदाय

साईक्या, न्यिन्गमा, काग्यू और गिलुक ये बौद्ध धर्म के चार सम्प्रदाय हैं। ये सभी सम्प्रदाय अलग–अलग गुरुओं द्वारा आरम्भ किए गए हैं, उनकी बौद्ध धर्म में बहुत प्रतिष्ठा है। उन सम्प्रदायों के अनुयाई,ष उनकी प्रतिष्ठा भगवान की भांति ही करते हैं। साईक्या सम्प्रदाय के पाँच पंडितों का नाम अंकित है ध्यान कक्ष में लगे एक चित्र में। काग्यूत परम्परा के गुरु का भी चित्र लगा था। गुरु रिनपोछे का भी चित्र लगा था।

### महायान और हीनयान

भगवान बुद्ध के निर्वाण के मात्र 100 वर्ष बाद बौद्धों में नैसर्गिक मतभिन्नता उभरकर सामने आई, जिससे साधना की दो प्रकार की मान्यतायें विकसीत हुईं। वैशाली में सम्पन्न द्वितीय बौद्ध संगीति में थेर भिक्षुओं ने मतभेद रखने वाले भिक्षुओं को संघ से बाहर निकाल दिया। अलग हुए इन भिक्षुओं ने उसी समय अपना अलग संघ बनाकर स्वयं को 'महासांघिक' और जिन्होंने निकाला था उन्हें 'हीनसांघिक' नाम दिया, जिसने कालांतर में महायान और हीनयान का रूप धारण कर किया। महायान में वज्रयान भी होता है। हीनयान के कुल अट्ठारह मत थे, जिनमें से प्रमुख तीन हैं– थेरवाद (स्थविरवाद), सर्वास्तित्ववाद (वैभाषिक) और सौतांत्रिक।

### तिपिटक

सम्राट अशोक ने 249 ई.पू. में पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन कराया, जिसमें भगवान बुद्ध के वचनों को संकलित किया गया। इस बौद्ध संगीति में पालि तिपिटक (त्रिपिटक) का संकलन हुआ। श्रीलंका में प्रथम शती ई. पू. में पालि तिपिटक को सर्वप्रथम लिपिबद्ध किया गया था। यही पालि तिपिटक अब सर्वाधिक प्राचीन तिपिटक के रूप में उपलब्ध है।

### आचार्यों की प्रतिष्ठा

तक्षशिला विश्वविद्यालय के अनेक पुर्व आचार्यों का भी चित्र अपने संगम में लगाते हैं। भगवान बुद्ध के साथ ही पू. दलाई लामा जी का भी चित्र लगाया

कर्म) का परिणाम होता है। जबकि निर्वाण बौद्ध शिक्षण का अंतिम लक्ष्य है, पारंपरिक बौद्ध अभ्यास का अधिकांश भाग योग्यता और योग्यता हस्तांतरण प्राप्त करने पर केंद्रित रहा है, जिससे व्यक्ति अच्छे क्षेत्रों में पुनर्जन्म प्राप्त करता है और बुरे क्षेत्रों में पुनर्जन्म से बचता है।

जाता है। इन सब चित्रों का विवरण बताते हुए पू. चोसफेल जोत्पा लामा जी ने बौद्ध धर्म को सनातन धर्म का ही अंग बताते हैं। उन्होंने श्रमण परम्परा वालों को बौद्ध और जैन कहा, तथा वैदिक लोगों को हिन्दू कहा। लामा जी ने कहा कि दोनों एक ही हैं, दोनों सनातनी हैं। मान्यताओं में थोड़ा अंतर है, शेष सब समान है। सनातन धर्म की रीति से ही बौद्ध धर्म में अपने विभिन्न आचार्यों की भी बहुत प्रतिष्ठा होती है।

## हवन भी करते हैं बौद्ध धर्म में

बौद्ध संगम में आये हुए बौद्ध लामा, रिनपोछे और अन्य सहयोगियों ने मिलकर विश्व हिन्दू परिषद के प्रयागराज कुम्भ सेक्टर 18 में स्थित शिविर में आकर रस्सी (सूत्र) से नापकर मंडल बनाया, उसके पीछे एक मंच बनाया जिसपर प्रमुख रिनपोछे विराजमान थे। मंच के ठीक सामने हवन कुंड के उसपार कुछ दूरी पर दस लामा बैठे थे। वो मंत्रोच्चारण कर रहे थे। उनमें दो के पास एक विशेष वाद्ययंत्र था, जिसको वो चिन्हित मंत्रों के अनुरूप बजाते थे। एक लामा के पास झल्लरी थी, वो उसे भी विशेष मंत्र पड़ावों पर बजाते थे। रिनपोछे और उनके सामने बैठे एक प्रमुख लामा के पास एक हाथ में घंटी और दूसरे हाथ में कुछ मुर्तिनुमा धार्मिक चिन्ह था। मंत्रोच्चार वो मुख और जिह्वा से ऐसे करते थे, जैसे आवाज एकदम गले से निकाल रहे थे। ऐसा प्रतित हुआ कि पहाड़ों की आत्यंतिक ऊंचाई पर विरल वायु वाले क्षेत्र में इस प्रकार से उच्चारण करने पर हृदय को बल मिलता है और ऑक्सीजन स्तर बनाये रखने में सहायता मिलती है। मंत्रों के साथ अनेक प्रकार के अनाजों को अग्नी कुंड में आहूत किया गया। घी और विविध प्रकार की हवन सामग्री का उपयोग किया गया। विधि में और सामग्रियों में कुछ अंतर होने के पश्चात भी सम्पूर्णता में सबकुछ समान ही था। हवन सनातन रीति के सभी मत–पंथ करते हैं, अपनी मान्यतानुसार अपनी आस्था के देवों के मंत्रों का उपयोग हवन में करते हैं।

## पुनर्जन्म की मान्यता

विश्व हिन्दू परिषद के संत सम्मेलन में एक ऐसे बौद्ध संत पधारे थे, जिन्होंने बताया कि वो वर्तमान दलाई लामा के पिछले जन्म के गुरु हैं। एक संत ऐसे भी मिले जिन्होंने बताया कि यह उनका आठवां जन्म है बौद्ध धर्म गुरु के रूप में। बौद्ध धर्म के सन्दर्भ में पुनर्जन्म का अर्थ है मृत्यु के बाद पुनः जन्म लेना और संसारचक्र में बने रहना। जन्म के बाद मृत्यु और मृत्यु के बाद पुनः जन्म का यह अनन्त चक्र एक महान दुःख है। यह चक्र तभी टूटता है जब ज्ञान प्राप्त होता है और इच्छाओं का अन्त हो जाता है। कर्म, निर्वाण और मोक्ष की भांति पुनर्जन्म भी बौद्ध धर्म का एक मूल सिद्धान्त है।

## पुनर्जन्म और कर्मवाद

पुनर्जन्म सिद्धांत, जिसे कभी–कभी पुनर्जन्म या देहांतरण के रूप में संदर्भित किया जाता है, का दावा है कि पुनर्जन्म संसार के छह क्षेत्रों में से एक में होता है, देवताओं, अर्ध–देवताओं, मनुष्यों, पशु क्षेत्र , भूत क्षेत्र और नरक क्षेत्रों के क्षेत्र। पुनर्जन्म, जैसा कि विभिन्न बौद्ध परंपराओं द्वारा कहा गया है, कर्म द्वारा निर्धारित होता है, अच्छे क्षेत्रों में कुशल कर्म (अच्छा या कुशल कर्म) का पक्ष लिया जाता है, जबकि बुरे क्षेत्रों में पुनर्जन्म अकुशल कर्म (बुरा या अकुशल

## विज्ञान संताना के रूप में

कुछ बौद्ध परंपराएं दावा करती हैं कि विज्ञान (चेतना), एक निरंतरता या धारा (संताना) के रूप में मौजूद है और वही पुनर्जन्म से गुजरती है। थेरवाद जैसी कुछ परंपराएँ दावा करती हैं कि पुनर्जन्म तुरंत होता है और कोई भी ष्वस्तुष (चेतना भी नहीं) पुनर्जन्म लेने के लिए जीवन भर नहीं चलती है (हालांकि एक कारण संबंध है, जैसे जब एक मुहर मोम पर अंकित होती है)। तिब्बती बौद्ध धर्म जैसी अन्य बौद्ध परंपराएँ मृत्यु और पुनर्जन्म के बीच एक अंतरिम अस्तित्व (बार्डो) मानती हैं, जो 49 दिनों तक चल सकता है। यह विश्वास तिब्बती अंत्येष्टि अनुष्ठानों को संचालित करता है।

## निर्वाण

बौद्ध धर्म निर्वाण का अर्थ बुझ जाने से लगाता है। तृष्णा का बुझ जाना। वासनाओं का शांत हो जाना। तृष्णा और वासना से ही दुःख होता है। दुःखों से पूरी तरह छुटकारे का नाम है– निर्वाण। भगवान बुद्ध ने कहा है– "भिक्षुओं! संसार अनादि है। अविद्या और तृष्णा से संचालित होकर प्राणी भटकते फिरते हैं। उनके आदि–अंत का पता नहीं चलता। भवचक्र में पड़ा हुआ प्राणी अनादिकाल से बार–बार जन्मता–मरता आया है। संसार में बार–बार जन्म लेकर प्रिय के वियोग और अप्रिय के संयोग के कारण रो–रोकर अपार आँसू बहाए हैं। दीर्घकाल तक दुःख का, तीव्र दुःख का अनुभव किया है। अब तो सभी संस्कारों से निर्वेद प्राप्त करो, वैराग्य प्राप्त करो, मुक्ति प्राप्त करो।"

*जिघच्छा परमा रोगा, संखारा परमा दुखा।*
*एव ञत्वा यथाभूतं निब्बानं परम सुखं।।*

बुद्ध कहते हैं रोगों की जड़ जिघृक्षा है। ग्रहण करने की इच्छा, तृष्णा। सारे दुःखों का मूल है संस्कार। इस तत्व को जानकर तृष्णा और संस्कार के नाश से ही मनुष्य निर्वाण पा सकता है।

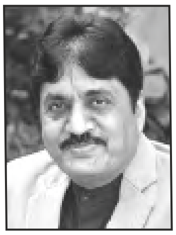

# भारत के लिए खतरा है पाक-बाँग्लादेश की नजदीकियाँ

**ललित गर्ग**

बाँग्लादेश की कार्यवाहक सरकार प्रधानमंत्री शेख हसीना के अपदस्थ होने के बाद से लगातार भारत विरोधी गतिविधियों, कारगुजारियों एवं षडयंत्रों में संलग्न है, लगता है पाकिस्तान की शह पर बाँग्लादेश का भारत विरोधी रवैया बढ़ रहा है। बाँग्लादेश में लगातार भारत विरोधी मुहिम व अल्पसँख्यक हिन्दुओं एवं हिन्दू धर्मस्थलों पर हिंसक हमलों के बाद अब भारत सीमा पर बाड़बंदी को लेकर बेवजह का विवाद खड़ा किया जा रहा है। जबकि इस मुद्दे पर दोनों देशों के बीच पहले ही सहमति बनने के बाद बड़े हिस्से पर बाड़बंदी हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार बैठे बाँग्लादेश के हुक्मरान विवाद के नये–नये मुद्दे तलाश रहे हैं एवं दोनों देशों की आपसी संबंधों को नेस्तनाबूंद कर रहे हैं। बाँग्लादेश भारत की शांति व सद्भाव की कामना एवं सहनशीलता को उसकी कमजोरी न माने, ऐसी भूल बाँग्लादेश के लिए बहुत भारी पड़ सकती है। दोनों देशों की शांति, सद्भावना एवं सौहार्द के लिए किसी तीसरे देश के दखल को बढ़ने न दिया जाए।

2015 में शेख हसीना के कार्यकाल के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ढाका पहुंचे। यहाँ दोनों नेताओं ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किया। इसे लैंड बाउंड्री एग्रीमेंट कहते हैं। इसी के अन्तर्गत भारत ने अब तक 3271 किलोमीटर सीमा कर बाड़बंदी कर दी है। अब केवल 885 किलोमीटर खुली सीमा की बाड़बंदी बाकी है। भारत बचे इलाके की बाड़बंदी कर रहा है, लेकिन बाँग्लादेश भारत की कोशिशों में अड़ंगा डाल कर दोनों देशों के बीच हुए समझौते को नकार रहा है। बाँग्लादेश के गृह मंत्रालय ने ढाका में भारतीय उच्चायुक्त प्रणय वर्मा को बुलाकर विरोध व्यक्त किया, तो इसके जवाब में भारत ने भी जवाबी कार्रवाई की और बाँग्लादेश के डिप्टी हाईकमिश्नर नूरूल इस्लाम को तलब कर अपना विरोध जताया। भारत अपनी सीमाओं को अभेद्य बना रहा है। सीमाओं के खुले रहने से बाँग्लादेश से लगातार अवैध घुसपैठ, हथियारों की तस्करी, ड्रग स्मगलिंग, नकली नोटों का कारोबार और आतंकवादी गतिविधियाँ लगातार हो रही हैं। विशेषतः पाकिस्तान अब अपनी आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए बाँग्लादेश का उपयोग कर रहा है। दरअसल बाँग्लादेश की युनूस सरकार पाकिस्तान के इशारों पर पुराने मुद्दे उछाल कर विवाद को हवा दे रही है। निश्चित ही पाक से उसकी नजदीकियाँ लगातार बढ़ी हैं और वहाँ पाक सेना के अधिकारियों की सक्रियता देखी गई है, ऐसी जटिल होती स्थितियों में भारत को अपनी सुरक्षा चिंताओं के लिए कदम उठाने ही चाहिए एवं अपनी सीमाओं को सुरक्षित बनाना ही चाहिए। पाकिस्तान पंजाब, जम्मू–कश्मीर व नेपाल के रास्ते आतंकवादियों को भारत भेजने की कोशिशें लगातार करता रहा है, अब उसने बाँग्लादेश को भी इन गतिविधियों के लिए चुना है एवं बाँग्लादेश से लगी भारत की खुली सीमा का दुरुपयोग कर रहा है, तो भारत को सतर्क एवं सावधान

होना ही चाहिए। पाकिस्तान से लगती सीमा पर तमाम चौकसी के बाद भी सीमा पार से जिस तरह जब–तब आतंकियों की घुसपैठ होती रहती है, वह गंभीर चिंता की बात है। जब पाकिस्तान से लगती सीमा भारत की सुरक्षा के लिए खतरा बनी हुई है, तब यह शुभ संकेत नहीं कि बाँग्लादेश से लगी सीमा भी भारत के लिए चिंता का कारण बने।

बड़ी सच्चाई है कि पाक का जन्म ही भारत विरोधी मानसिकता से हुआ है। ऐसे में अतीत से सबक लेते हुए भारत को अपनी सीमाओं की सुरक्षा को लेकर किसी तरह की चूक नहीं करनी चाहिए। किसी भी तरह की ढिलाई भारतीय सुरक्षा पर भारी पड़ सकती है। भारत की उदारता को बाँग्लादेश हमारी कमजोरी न मान ले, इसलिए उसे बताना जरूरी है कि भारत से टकराव की कीमत उसे भविष्य में चुकानी पड़ सकती है। यह भी कि संबंधों में यह कसैलापन, दोगलापन एवं टकराव लंबे समय तक नहीं चल सकता। उसकी यह कटुता उसके लिए ही कालांतर में घातक एवं विनाशकारी साबित हो सकती है। यह विडंबना ही है कि नोबेल पुरस्कार से सम्मानित अंतरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस से क्षेत्र में शांति व सद्भाव की जो उम्मीदें थी, उसमें उन्होंने मुस्लिम कट्टरपंथ को आगे करके निराश ही किया है। उनकी सरकार लगातार विघटनकारी, अड़ियल व बदमिजाजी का रुख अपनाए हुए है, दोनों देशों के संबंध बिगाड़ने में पर्दे के पीछे पाकिस्तान की भूमिका को साफ–साफ देखा जा रहा है। जबकि शेख हसीना शासनकाल में भारत और बाँग्लादेश के संबंध सामान्य थे, तो भारत बाँग्लादेश को विश्वास में लेकर बाड़बंदी कर रहा था, लेकिन अब यूनुस सरकार लगातार उकसाने वाली कार्रवाई कर रही है। उसने पाकिस्तानियों का बाँग्लादेश में प्रवेश आसान कर दिया है, तो पाक के बाँग्लादेश को भारत विरोधी प्लेटफॉर्म के रूप में इस्तेमाल करने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। इसी के चलते बाँग्लादेश की भारत विरोधी बयानबाजी और कारगुजारी से दोनों देशों के संबंधों में जबरदस्त कड़वाहट आ चुकी है। बावजूद इसके गत दिसम्बर में भारत के विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री ने अपनी ढाका यात्रा के दौरान बाँग्लादेश को आश्वस्त किया था कि भारत उसका दोस्त बना हुआ है और व्यापार, ऊर्जा, बुनियादी ढांचे और कनेक्टिविटी के मामलों में रिश्ते पहले की तरह बरकरार रहेंगे। उस समय ऐसा लगा था कि दोनों पक्षों ने सीमा पर स्थिति को शांत कर लिया है।

यूनुस सरकार ने भारत विरोधी तत्वों को न केवल हवा दी है, बल्कि उनको उग्र कर दिया है। जेल में बंद कई भारत विरोधी तत्वों को बेल दे दी गयी है, ये ही तत्व भारत में अस्थिरता फैलाने की साजिश रच रहे हैं। लिहाजा भारत के लिए बॉर्डर पर घेराबंदी अत्यावश्यक हो गयी है। राजनीतिक आग्रह, पूर्वाग्रह एवं दुराग्रह के चलते यूनुस सरकार शेख हसीना के पिता की विरासत को निपटाने एवं धुंधलाने की कोशिशों में लगी हुई है। कट्टरपंथी तत्व जनाक्रोश के चलते अपनी सुविधा का मुहाबरा गढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। भारत में पहले से ही लाखों बाँग्लादेशी अवैध रूप से रह रहे हैं, लेकिन ढाका द्वारा आतंकवादियों और दोषी ठहराए गए इस्लामी कट्टरपंथियों की रिहाई के बाद भारत द्वारा बॉर्डर पर कंटीले तारों को लगाने की कोशिश का बाँग्लादेश सरकार द्वारा कड़ा विरोध दर्शा रहा है कि पाकिस्तान की तरह बाँग्लादेश भी भारत में अस्थिरता, अशांति एवं अराजकता फैलाना चाहता है।

> **बड़ी सच्चाई है कि पाक का जन्म ही भारत विरोधी मानसिकता से हुआ है। ऐसे में अतीत से सबक लेते हुए भारत को अपनी सीमाओं की सुरक्षा को लेकर किसी तरह की चूक नहीं करनी चाहिए। किसी भी तरह की ढिलाई भारतीय सुरक्षा पर भारी पड़ सकती है। भारत की उदारता को बाँग्लादेश हमारी कमजोरी न मान ले, इसलिए उसे बताना जरूरी है कि भारत से टकराव की कीमत उसे भविष्य में चुकानी पड़ सकती है।**

बाँग्लादेश बाड़ लगाने के समझौते का सम्मान करने के बजाए, उसकी समीक्षा करने की बात करके, उसमें रोड़ा अटकाना चाह रहा है। वह उन स्थानों पर कंटीले तारों वाली बाड़ लगाने का खास तौर पर विरोध कर रहा है, जहाँ से बड़े पैमाने पर घुसपैठ और तस्करी होती है और यहीं से आतंकवादी गतिविधियों को संचालित करने की संभावनाएँ हैं। इसके कुछ पुष्ट प्रमाण भी मिले हैं। इस संदर्भ में बाँग्लादेश वैसे ही कुतर्क एवं बेतूके तथ्य प्रस्तुत कर रहा है, जैसे सीमा सुरक्षा के भारत के प्रयत्नों पर पाकिस्तान करता रहता है। हैरानी नहीं कि यह बाँग्लादेश से पाकिस्तान की हालिया नजदीकी किसी बड़ी दुर्घटना या आतंकी हमले का सबब बन जाए। भारत इसकी अनदेखी नहीं कर सकता। भारत को यह देखना होगा कि कहीं ये दोनों देश मिलकर उसके खिलाफ कोई ताना–बाना तो नहीं बुन रहे हैं ? निश्चित रूप से पिछले दिनों बाँग्लादेश से रिश्तों में जिस तरह से अविश्वास एवं कड़वाहट उपजी है, उसके चलते भारत अपनी सुरक्षा चिंताओं को नजरअंदाज नहीं कर सकता। भारत के लिए यही उचित है कि वह पाक–बाँग्लादेश के संभावित गठजोड़ से सावधान रहे। भारत को अपनी सुरक्षा चिंताओं के लिए कदम उठाने ही चाहिए। बीएसएफ और बॉर्डर गार्ड बाँग्लादेश यानी बीजीबी में कई बार बातचीत के बाद बाड़बंदी मुद्दे पर सहमति बन चुकी है। लेकिन बाँग्लादेश भारत की सदाशयता एवं उदारता के बावजूद टकराव के मूड में नजर आता है। ऐसा ही रवैया उसका अल्पसँख्यकों की सुरक्षा को लेकर भी रहा है, जिस बारे में वह अब दलील दे रहा है कि हालिया बाँग्लादेश में हिन्दुओं से जुड़ी हिंसक घटनाएँ सांप्रदायिक नहीं, बल्कि राजनीतिक कारणों से हुई हैं। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि दोनों देशों के संबंध बिगाड़ने में पर्दे के पीछे पाकिस्तान की भूमिका हो। जिस बाँग्लादेश को पाकिस्तानी क्रूरता से मुक्त कराकर एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत ने तमाम कुर्बानियों के बाद जन्म दिया, उसका यह रवैया दुर्भाग्यपूर्ण ही नहीं, बल्कि विडम्बनापूर्ण कहा जाएगा।

lalitgarg11@gmail.com

# विश्व हिन्दू परिषद सेवा साधना

अजेय कुमार पारीक

**से**वा परमो धर्मः' इस उक्ति से प्रेरित होकर पीड़ित मानवता को अभाव मुक्त, कष्ट मुक्त करने के उद्देश्य से विश्व हिन्दू परिषद का सेवा विभाग सन् 1967 से कार्यरत है।

**हेतु पूर्वक किए जाने वाले सेवा कार्यों के चार उद्देश्य हैं –**

**1.** सामाजिक समरसता, **2.** धर्म प्रसार, **3.** कार्यकर्ताओं का निर्माण, **4.** सामाजिक जागरण एवं संगठन। उपरोक्त उद्देश्यों के आधार पर समाज जीवन में अभावों की पूर्ति करने लिए जिन चार शीर्षकों के अन्तर्गत सेवा कार्य संचालित हैं, वे हैं – शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं स्वावलम्बन। लगभग 58 वर्षों पूर्व प्रारम्भ हुई इस साधनामयी सेवा यात्रा में अनेक सफल प्रयोग किए गए हैं, जिनके आधार पर एक सुन्दर समाज निर्माण की दिशा में विनम्र प्रयास की सार्थकता सिद्ध हुई है।

**1. छात्रावास : धर्मनिष्ठा एवं सद्नागरिक निर्माण केन्द्र**

सम्पूर्ण देश में संचालित **118 छात्रावासों / आश्रम शालाओं** की इस दिशा में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हैं। असम राज्य के पर्वतीय जिले दिमाहसाओ के केन्द्र हाफलांग में सन् 1972 में एक छात्रावास आरम्भ किया गया था। आज वहाँ बालक / बालिकाओं के पृथक–पृथक छात्रावास एवं लगभग 700 बालक / बालिकाओं का **स्वामी विवेकानन्द (अँग्रेजी माध्यम) विद्यालय** संचालित है। इस सम्पूर्ण प्रकल्प के माध्यम से जिले की लगभग 110 बस्तियों में वहाँ के जनजातीय समाजबान्धवों से जीवन्त सम्पर्क बना है, जिसके कारण जेमी एवं दिमासा जनजातियों में ईसाई धर्मान्तरण लगभग समाप्त प्राय है। इन सभी बस्तियों के समाजबांधव अपने प्रकल्प से सतत् दिशा प्राप्त करते हैं। पुरातन छात्रों में से अनेक छात्र शासकीय सेवा में पुलिस, अध्यापक, नर्सिंग कर्मी, कृषक तथा जन प्रतिनिधि के रूप में सम्मानित जीवन निर्वाह कर रहे हैं।

कार्बीआंगलांग क्षेत्र में फुलोनी के **रेंगबांग्हम सेवाश्रम छात्रावास** का प्रारम्भ सन् 1979 में हुआ था। सम्पूर्ण कार्बीआंगलांग क्षेत्र में इस छात्रावास के प्रभाव के कारण अन्य जनजातियों की तुलना में कार्बी जनजाति में न्यूनतम धर्मांतरण हुआ है। पुरातन छात्रों में अनेक छात्रों में 5 शासकीय सेवा में, 16 अध्यापक, 26 सुरक्षा बलों में, 2 जनप्रतिनिधि एवं 7 सामाजिक संगठनों में सेवाएँ देते हुए सम्मानित जीवन निर्वाह कर रहे हैं। आन्ध्र प्रदेश का नक्सल प्रभावित क्षेत्र जो उड़ीसा एवं छत्तीसगढ़ राज्यों के वन प्रदेश की सीमा में स्थित है, **विदुरुनगरम आश्रम शाला प्रकल्प**। सन् 1975 से यह सम्पूर्ण क्षेत्र हिन्दू जागरण का केन्द्र बना है। लगभग 100 से अधिक गाँवों में इस छात्रावास के माध्यम से संगठन का सम्पर्क स्थापित हुआ है। अनेक पूर्व छात्र पुलिस, सेना, न्यायिक सेवा, बैंक एवं केन्द्रीय सीमा शुल्क विभाग आदि में सेवारत हुए हैं। कुछ पुरातन छात्र सँस्कृत शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् कर्मकाण्ड के पण्डित बने हैं। सुदूर उड़ीसा के जलेसपटा में संचालित **शंकराचार्य सँस्कृत कन्या आश्रम** में अनेक छात्र–छात्राएँ सँस्कृत शिक्षित होकर कर्मकाण्ड करवाने में सक्षम हुए हैं।

**2. बाल्य सँस्कारों का अभिनव प्रयोग : सँस्कारशाला**

अपने समाज के बालक / बालिकाओं को सँस्कारित, व्यवहारकुशल तथा आस्थावान बनाने का उपक्रम है सँस्कारशाला। यद्यपि समाज के समस्त बाल्य वर्ग के लिए सँस्कारों की प्रबल आवश्यकता है, तथापि प्रथम चरण में नगरीय पिछड़ी बस्तियों (झुग्गी–झोपड़ी) के 4 से 12 वर्ष आयु के बालक,

बालिकाओं के लिए योजना की गई है, जिसमें दो घंटे की कालावधि में खेल—कूद, योग, ध्यान, प्रेरणादाई गीत, भजन, श्लोक, मन्त्र, कथा, महापुरुषों के जीवन चरित्र, पर्व—त्योहार तथा देश—सँस्कृति के गौरव—ज्ञान पर आधारित पाठ्यक्रम के माध्यम से सँस्कार प्रदान करने के साथ—साथ गृह कार्य में सहायता एवं औपचारिक अध्ययन को उन्नत बनाने का प्रयास किया जाता है।

प्रतिदिन चलने वाली सँस्कारशाला के संचालन हेतु बस्ती की ही शिक्षित गृहणियों को प्रारम्भ में तीन दिवसीय अनिवासी प्रशिक्षण दिया जाता है। तत्पश्चात् प्रतिमाह एक दिवसीय दक्षता वर्ग के द्वारा उन्हें उत्तरोत्तर कुशल बनाया जाता है। सँस्कारशालाओं की संचालनकर्ता बहनें 'आचार्या' कहलाती हैं, जिन्हें निर्धारित मानधन राशि दी जाती है। सँस्कारशालाओं के संचालन में पिछड़ी बस्तियों की बहनों की भूमिका स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में विनम्र प्रयास है। वर्तमान में देश के 31 प्रान्तों के 95 स्थानों पर 1000 से अधिक सँस्कारशालाएँ संचालित हैं, जिनमें लगभग 18,000 बालक/बालिकाएँ सद्नागरिक बनने की दिशा में सँस्कार ग्रहण करने के साथ—साथ अपने औपचारिक अध्ययन को भी उन्नत करने में सफल हो रहे हैं। सँस्कारशालाओं के संचालन के माध्यम से सम्पूर्ण बस्ती के वातावरण में सुपरिवर्तन दिखाई देता है।

### 3. शिशु संगोपन एवं कन्या विकास

देश में 31 बाल कल्याण आश्रम (Orphanages) संचालित हैं जहाँ से शासकीय नियमों के आधार पर दत्तक (गोद) दिया जाता है। यहाँ पालित बालक/बालिकाओं को उच्चशिक्षित करने के साथ ही उन्हें नौकरी, व्यवसाय आदि में समायोजित किया जाता है। कन्याओं का सम्भ्रान्त परिवारों में विवाह सम्पन्न करवाने के पश्चात् भी उनसे भावात्मक सम्पर्क रखा जाता है।

### 4. बस्ती स्वास्थ्य जांच शिविर

सेवा बस्तियों में समय—समय पर स्वास्थ्य जांच शिविरों के आयोजनों के माध्यम से हजारों अभावग्रस्त समाजबांधव प्रतिवर्ष लाभान्वित होते हैं। नगरीय चिकित्सकों का सहयोग प्राप्त किया जाता है। पुष्य नक्षत्र में बालकों को स्वर्ण प्राशन उपलब्ध करवाया जाता है।

### 5. महिला स्वावलम्बन

महानगरों की पिछड़ी बस्ती की बहनों को मेहंदी एवं सौन्दर्य का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसी प्रकार देश में 300 से अधिक सिलाई प्रशिक्षण केन्द्रों के द्वारा अभावग्रस्त बहनों को धनार्जन की दिशा में अच्छा अवसर प्राप्त हो रहा है।

### 6. वृद्धजन की देखरेख एवं सम्भाल : होम केयर प्रशिक्षण

गोवा के यशस्वी सेवा प्रकल्प 'मातृछाया' के अन्तर्गत सन् 2015 से **होम केयर सर्टिफिकेट कोर्स** संचालित है। 6 माह के इस प्रशिक्षण में 3 माह सैद्धान्तिक एवं 3 माह का (अस्पताल में) व्यावहारिक प्रशिक्षण देकर युवक, युवतियों को वृद्धजन की सेवा करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। एक बैच में 40 युवक, युवतियों को प्रशिक्षण दिया जाता है। अभी तक इस कार्य में केरल से ही ईसाई सँस्थानों की प्रशिक्षित नर्सें उपलब्ध थीं। आज अपने इस केन्द्र के कारण महाराष्ट्र एवं गोवा के सम्पूर्ण क्षेत्र में हिन्दू विचार के युवक, युवतियाँ घर—परिवार के वृद्धजन की देखरेख एवं सम्भाल में सफल हो रहे हैं।

### 7. रुग्ण सहायता केन्द्र

गोवा मेडिकल कॉलेज एवं गोवा अस्पताल, गोवा के सबसे बड़े अस्पतालों में से एक है। इसमें बहु—विषयक सुपर—स्पेशियलिटी चिकित्सा उपचार सुविधाएँ हैं। स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्र में अपने पंख फैलाने के लिए 2001 में मातृछाया के रजत जयंती वर्ष के दौरान एक पहल की गई थी। इस प्रकार जी. एम.सी. अस्पताल के रुग्णों की सहायता के लिए **रुग्ण सहायता केन्द्र** का जन्म हुआ। प्रारम्भ में दुर्गावाहिनी और बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने स्वेच्छा से अपनी सेवाएँ प्रदान की थीं। मातृछाया के स्वयंसेवकों द्वारा रुग्ण को प्रदान की जाने वाली सभी सेवाएँ निःशुल्क हैं। वर्तमान में पचास जन स्थायी कर्मचारी के रूप में काम कर रहे हैं और 75 जन केन्द्रों को अपनी बहुमूल्य सेवाएँ प्रदान की हैं। रुग्ण सहायता केन्द्र का सम्पर्क 120 से अधिक गाँवों/बस्तियों तक है। वर्तमान में सम्पूर्ण गोवा में 5 सरकारी अस्पतालों में 60 स्वयंसेवक कार्यरत हैं।

### 8. स्वावलम्बन एवं धनार्जन

देश के युवा वर्ग को स्वरोजगार की दिशा में प्रेरित करते हुए स्वावलम्बी बनाने के लिए अनेक केन्द्रों के माध्यम से प्रयास संचालित हैं। वर्ष 2024 में लगभग 15,000 युवाओं को विविध कार्यों के माध्यम से धनार्जन के लिए सक्षम बनाया गया। उपलब्ध संसाधनों एवं कार्यकर्ता शक्ति के आधार पर प्रभुकृपा एवं समाज के सहयोग के बल पर सेवा कार्यों के परिणामकारी विस्तार के लिए सेवा विभाग प्रयासरत है।

sewa76@gmail.com

# समाजसेवी पुलिस अधिकारी आचार्य किशोर कुणाल

विजय कुमार

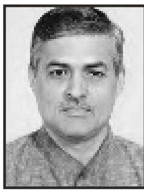

भारत में पुलिस के नाम और खाकी वर्दी से प्रायः लोग डरते हैं; पर आचार्य किशोर कुणाल ने अपने नये एवं अभिनव प्रयोगों से शासन, प्रशासन, समाजसेवा एवं सामाजिक समरसता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका जन्म 10 अगस्त, 1950 को बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के ग्राम बरुराज में हुआ था। 1970 में उन्होंने पटना वि.वि. से इतिहास और सँस्कृत विषय में बी.ए. किया। 1972 में वे पुलिस सेवा में आ गये और उन्हें गुजरात कैडर मिला। यद्यपि शिक्षा के प्रति अनुराग के चलते उन्होंने 1983 में इतिहास में एम.ए. की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। इस दौरान उन्हें रामशरण शर्मा एवं द्विजेन्द्र नारायण झा जैसे विख्यात इतिहासकारों का सान्निध्य मिला। इसके बाद वे पटना के पुलिस प्रमुख बनाये गये। उन दिनों बिहार की कानून व्यवस्था बहुत खराब थी। जाति, माफिया और परिवारवाद का सर्वत्र बोलबाला था। राजधानी पटना उससे सर्वाधिक दुष्प्रभावित थी; पर किशोर कुणाल ने अपनी बुद्धिमत्ता, व्यवहार कौशल तथा प्रशासनिक कठोरता से उसे ठीक किया।

1985 में उन्होंने पटना जंक्शन के पास स्थित 250 साल पुराने महावीर मंदिर का जीर्णोद्धार कर उसे विश्वविख्यात धार्मिक केन्द्र बनाया। अतः जनता ने उन्हें मंदिर न्यास का सचिव बना दिया। शीघ्र ही उन्होंने इसे देश के शीर्ष आय वाले मंदिरों में ला दिया। उसकी आय का उपयोग महावीर कैंसर संस्थान, महावीर आरोग्य संस्थान, महावीर नेत्रालय, महावीर वात्सल्य अस्पताल, महावीर हृदय अस्पताल तथा वेद विद्यालय आदि संस्थानों के निर्माण में किया। इससे हर जाति और धर्म के निर्धन लोगों को लाभ मिला। उनकी मान्यता थी कि पुजारी बनने का अधिकार किसी एक वर्ग को ही नहीं है। इसके लिए धार्मिक प्रवृत्ति तथा कर्मकांड की जानकारी जरूरी है। अतः उन्होंने रामानंद संप्रदाय से सम्बद्ध पिछड़ी जाति के व्यक्ति को अनेक प्रख्यात संतों की उपस्थिति में मुख्य पुजारी बनाया। यह प्रयोग देश भर में सराहा गया। इस मंदिर में सभी पुजारी और सेवादारों को मंदिर से मासिक दक्षिणा दी जाती है। चढ़ावे में आने वाली शेष राशि का उपयोग सेवा कार्य में होता है।

किशोर कुणाल में धर्म और समाजसेवा के प्रति भारी रुझान था। 2001 में स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति के बाद शासन ने उन्हें 'बिहार धर्मस्व न्यास' का अध्यक्ष बनाया। उन्होंने बिहार के प्रसिद्ध साहित्यकार आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव के साथ 'दलित देवोभव' नामक ग्रंथ लिखा, जिसे भारत सरकार ने प्रकाशित किया। उन्होंने सँस्कृत साहित्य तथा प्राचीन पांडुलिपियों के संकलन एवं उद्धार का भी प्रयास किया। कैमूर पहाड़ियों पर स्थित गुप्तकालीन मुंडेश्वरी भवानी मंदिर को देश का प्राचीनतम मंदिर सिद्ध करने के लिए अनेक गोष्ठियाँ कीं। महावीर मंदिर से 'धर्मायण' नामक त्रैमासिक शोध पत्रिका भी निकाली।

श्रीराम मंदिर विवाद के दौरान प्रधानमंत्री चंद्रशेखर और विश्वनाथ प्रताप सिंह के कहने पर उन्होंने दोनों पक्षों से वार्ता की; पर कोई परिणाम नहीं निकला। इस मुकदमे में उनकी पुस्तक 'अयोध्या रिविजिटेड' का भी उपयोग हुआ। राम मंदिर के लिए उन्होंने महावीर मंदिर न्यास की ओर से दस करोड़ रु. का चंदा दिया तथा वहाँ नियमित भंडारे की व्यवस्था की। वे अनेक धार्मिक, साँस्कृतिक और सामाजिक संगठनों के प्रणेता; भारतीय वांग्मय, इतिहास तथा सँस्कृति के मूर्धन्य विद्वान थे। इसके लिए उन्हें अनेक मान और सम्मान भी प्राप्त हुए। बिहार के प्राचीन मंदिरों के उद्धार और प्रबंधन में भी उनकी बड़ी भूमिका रही। उन्होंने बिहार के चंपारण में 'विराट रामायण मंदिर' का निर्माण शुरू कराया, जो पूरा होने पर कंबोडिया के अंगकोरवाट मंदिर से भी बड़ा होगा; पर उसके पूरा होने से पहले ही 29 दिसम्बर, 2024 को हुए हृदयाघात से उनकी आत्मा हनुमत चरणों में विलीन हो गयी।

(hardinpavan.blogspot.com)
vj.kumar.1956@gmail.com

# अगरबत्ती

## सुगंध, आध्यात्मिकता और स्वास्थ्य का संगम

**डॉ. आनंद मोहन**

सहयोगी - डॉ. अग्रताबेन वधेल, सबरीन बशीर, आलोक मोहन

अगरबत्ती भारतीय संस्कृति और परंपरा का एक अभिन्न हिस्सा रही है। प्राचीन काल से लेकर आज तक, इसका उपयोग पूजा, ध्यान, और शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए किया जाता रहा है। अगरबत्ती न केवल वातावरण को महकाती है, बल्कि यह मानसिक शांति, भावनात्मक संतुलन और शारीरिक स्वास्थ्य को भी बढ़ावा देती है। इसका सुगंधमय धुंआ वातावरण को शुद्ध करता है, सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है और आध्यात्मिकता को प्रेरित करता है। इसके उपयोग से शरीर और मस्तिष्क दोनों को शांति मिलती है, और यह हमारी समग्र भलाई में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

### अगरबत्ती का इतिहास और सँस्कृति में स्थान

अगरबत्ती का इतिहास बहुत पुराना है, और यह भारतीय सँस्कृति में गहरे पैठी हुई है। प्राचीन भारतीय साहित्य और धार्मिक ग्रंथों में अगरबत्ती के महत्व का उल्लेख मिलता है। वेदों और उपनिषदों में पूजा और साधना के लिए सुगंधित पदार्थों का उपयोग करने की बात की गई है। भारतीय धर्मों में अगरबत्ती को विशेष रूप से धार्मिक अनुष्ठानों, पूजा–पाठ, ध्यान, और योग में शामिल किया गया है। यह माना जाता है कि अगरबत्ती का धुआँ प्रार्थनाओं को ईश्वर तक पहुँचाता है और वातावरण को शुद्ध करता है। विभिन्न सँस्कृतियों में भी अगरबत्ती का उपयोग किया जाता है, जैसे कि बौद्ध, ईसाई और इस्लामी परंपराएँ। हर सँस्कृति और धर्म में इसका उपयोग अपने विशेष उद्देश्य को पूरा करने के लिए किया जाता है, चाहे वह ध्यान में केंद्रित करने के लिए हो, या धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेने के लिए। अगरबत्ती को त्याग, सेवा और समर्पण का प्रतीक भी माना जाता है, क्योंकि यह स्वयं जलकर वातावरण को सुगंधित करती है।

### मानसिक शांति और भावनात्मक संतुलन

अगरबत्ती का सबसे महत्वपूर्ण लाभ इसके सुगंध के माध्यम से मानसिक शांति और भावनात्मक संतुलन प्राप्त करना है। विभिन्न प्रकार की अगरबत्तियाँ, जैसे चंदन, लैवेंडर, और चमेली, मानसिक तनाव को कम करने और मस्तिष्क को शांत करने में सहायक होती हैं। इनकी सुगन्ध मस्तिष्क के उन हिस्सों को प्रभावित करती है, जो भावनाओं और स्मृतियों से जुड़े होते हैं, और इस प्रकार यह मानसिक शांति की प्राप्ति में मदद करती है। जब वातावरण में एक हल्की, सुखदायक सुगंध फैलती है, तो मन शांति का अनुभव करता है और चिंता और तनाव कम हो जाते हैं।

### ध्यान, योग और आध्यात्मिकता में उपयोग

अगरबत्ती का उपयोग ध्यान और योग में भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। योग और ध्यान के अभ्यास में अगरबत्ती की सुगंध मानसिक एकाग्रता को बढ़ाने में सहायक होती है। यह आत्मा को शुद्ध करने में मदद करती है और आध्यात्मिक अनुभव

को गहरा बनाती है। ध्यान के दौरान अगरबत्ती की खुशबू से मन को शांत किया जा सकता है और व्यक्ति को अपने भीतर की शांति और आध्यात्मिक उन्नति की ओर मार्गदर्शन किया जा सकता है। यह साधना की प्रक्रिया को एक नई ऊँचाई पर ले जाती है और मानसिक और आध्यात्मिक जागरूकता को बढ़ाती है।

हिंदू धर्म में विशेष रूप से पूजा और अर्चना के दौरान अगरबत्ती जलाना अनिवार्य माना जाता है। इसका कारण यह है कि यह वातावरण को शुद्ध करता है और ईश्वर की उपस्थिति को महसूस करने में मदद करता है। बौद्ध धर्म में भी अगरबत्ती जलाने की परंपरा है, जहाँ इसे ध्यान केंद्रित करने के लिए और मानसिक शांति प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाता है। इसी तरह से, ईसाई और इस्लामी परंपराओं में भी अगरबत्ती या अन्य सुगंधित पदार्थों का उपयोग ध्यान और पूजा के दौरान किया जाता है।

**एकाग्रता और कार्यक्षमता में वृद्धि**

अगरबत्ती न केवल मानसिक शांति प्रदान करती है, बल्कि यह कार्यक्षमता और एकाग्रता को भी बढ़ाती है। अध्ययन के दौरान अगरबत्ती जलाने से मस्तिष्क की सतर्कता बढ़ती है और थकान कम होती है। कुछ विशेष सुगंध, जैसे चंदन और पैचुली, मानसिक स्पष्टता को बढ़ाने में मदद करती हैं और विचारों को तीव्र करती हैं। जब कोई व्यक्ति लंबे समय तक काम करता है, तो मस्तिष्क थका हुआ महसूस करता है और इस स्थिति में अगरबत्ती की सुगंध ताजगी और ऊर्जा का संचार करती है। आधुनिक कार्यस्थल और अध्ययन केंद्रों में अगरबत्ती का उपयोग एक आम प्रथा बन चुकी है। यह न केवल एक आरामदायक वातावरण बनाती है, बल्कि कार्यों को जल्दी और कुशलता से पूरा करने में मदद करती है। सुगंधित वातावरण कार्यकुशलता को बढ़ाता है और व्यक्ति को अधिक उत्पादक बनाता है।

**प्राकृतिक कीट–नियंत्रण और वायु शुद्धिकरण**

अगरबत्ती का एक और महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह प्राकृतिक कीट–नियंत्रण का कार्य करती है। नीम, सिट्रोनेला और

अन्य हर्बल अवयवों से बनी अगरबत्तियाँ मच्छरों और अन्य कीटों को दूर करती हैं। यह वातावरण को शुद्ध करती है और एक ताजगी का अनुभव देती है। विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में, जहाँ मच्छरों की समस्या अधिक होती है, वहाँ रात में अगरबत्तियाँ जलाना एक सामान्य प्रथा है। इसके अतिरिक्त, अगरबत्तियों में एंटी–बैक्टीरियल गुण होते हैं, जो वातावरण को शुद्ध करने में मदद करते हैं। यह बैक्टीरिया और सूक्ष्मजीवों को नष्ट कर सकती हैं, जिससे हवा स्वच्छ और ताजगी से भरी रहती है। इस तरह, अगरबत्ती न केवल मानसिक शांति प्रदान करती है, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य को भी बढ़ावा देती है।

**धार्मिक, साँस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व**

भारतीय सँस्कृति में अगरबत्ती का उपयोग सिर्फ एक सुगंधित उत्पाद के रूप में नहीं, बल्कि धार्मिक और साँस्कृतिक महत्व के रूप में भी किया जाता है। यह आत्म–बलिदान और सेवा का प्रतीक मानी जाती है, क्योंकि अगरबत्ती जलने के दौरान खुद जलकर वातावरण को सुगंधित करती है, जिससे यह त्याग और समर्पण का प्रतीक बन जाती है। हिंदू धर्म में अगरबत्ती का उपयोग विशेष रूप से पूजा, अर्चना, और अनुष्ठानों के दौरान किया जाता है। इसके अलावा, अगरबत्ती का जलाना धार्मिक जागरूकता और एकाग्रता को बढ़ाने में सहायक होता है। यह हमें ध्यान और प्रार्थना की ओर अग्रसर करने में मदद करती है और हमें आध्यात्मिक विकास की ओर प्रेरित करती है।

**दैनिक जीवन में अगरबत्ती का महत्व**

अगरबत्ती का उपयोग अब केवल धार्मिक और आध्यात्मिक संदर्भ में ही नहीं, बल्कि दैनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में भी किया जाता है। यह घर, दफ्तर, योग कक्ष और ध्यान केंद्रों में एक सुखद वातावरण बनाने में सहायक होती है। कुछ लोग इसे अपने दिन की शुरुआत करने के लिए जलाते हैं ताकि उन्हें सकारात्मक ऊर्जा मिल सके, जबकि कुछ लोग इसे दिन के अंत में जलाते हैं ताकि उनके मन को शांति मिले और वे अपनी थकान को दूर कर सकें। अगरबत्ती का उपयोग न केवल मानसिक शांति प्राप्त करने के लिए, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य और एकाग्रता को बढ़ाने के लिए भी किया जाता है। यह व्यक्ति को अपने कार्यों में अधिक कुशल और प्रभावी बनाने में मदद करती है।

**निष्कर्ष**

अगरबत्ती केवल एक साधारण सुगंधित उत्पाद नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। इसका उपयोग न केवल मानसिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति के लिए किया जाता है, बल्कि यह स्वास्थ्य लाभ, एकाग्रता, और कार्यक्षमता को बढ़ाने में भी सहायक होती है। इसके प्राकृतिक तत्वों से निर्मित गुण इसे पर्यावरण के अनुकूल बनाते हैं और यह घरों में वायु शुद्ध करने में भी मदद करती है। अगली बार जब भी आप मानसिक शांति और सकारात्मक ऊर्जा की आवश्यकता महसूस करें, एक अगरबत्ती जलाएँ और इसके जादुई प्रभावों का अनुभव करें।

# क्षारीय भोजन से स्वास्थ्य पायें

शरीर को रखे रोगमुक्त अपनाएँ अल्कलाइन (क्षारीय) भोजन और दिनचर्या, जानिये स्वस्थ शरीर का pH मान और जानें इससे जुड़ी बीमारियाँ, शरीर को कर लो अल्कलाइन, हार्ट, कैंसर, किडनी, थायराइड, शुगर, आर्थराइटिस, सोरायसिस भी पास नहीं फटकेगा। कोई भी रोग हो चाहे कैंसर भी, Alkaline वातावरण में पनप नहीं सकता। डायबिटीज, कैंसर, हार्ट, ब्लड प्रेशर, जोड़ों का दर्द, UTI – पेशाब के रोग, ऑस्टियोपोरोसिस, सोरायसिस, यूरिक एसिड का बढ़ना, गठिया, थायराइड, गैस, बदहजमी, दस्त, हैजा, थकान, किडनी के रोग, पेशाब सम्बंधित रोग, पत्थरी और अन्य कई प्रकार के जटिल रोग। इन सबको सही करने का सबसे सही और सस्ता उपयोग है शरीर को एल्कलाइन कर लेना।

**पहले तो जानिए पी एच लेवल क्या है?**

इसको समझने के लिए सबसे पहले आपको PH को समझना होगा, हमारे शरीर में अलग–अलग तरह के द्रव्य पाए जाते हैं, उन सबकी PH अलग–अलग होती है, हमारे शरीर की सामान्य Ph 7.35 से 7.41 तक होती है, PH पैमाने में PH 1 से 14 तक होती है, 7 PH न्यूट्रल मानी जाती है, यानी ना एसिडिक और ना ही एल्कलाइन। 7 से 1 की तरफ ये जाती है, तो समझो एसिडिटी यानी अम्लता बढ़ रही है, और 7 से 14 की तरफ जाएगी, तो Alkaline जल यानी क्षारीयता बढ़ रही है। अगर हम अपने शरीर के अन्दर पाए जाने वाले विभिन्न द्रव्यों की PH को Alkaline की तरफ लेकर जाते हैं, तो हम बहुत सारी बीमारियों के मूल कारण को हटा सकते हैं और उनको हमेशा के लिए समाप्त कर सकते हैं।

**जियो जी भर**

Cancer and PH – कैंसर उदहारण के तौर पर सभी तरह के कैंसर सिर्फ Acidic Environment में ही पनपते हैं। क्योंकि कैंसर की कोशिका में शुगर का ऑक्सीजन की अनुपस्थिति में Fermentation होता है, जिससे अंतिम उत्पाद के रूप में लैक्टिक एसिड बनता है और यही लैक्टिक एसिड Acidic Environment पैदा करता है, जिस से वहाँ पर एसिडिटी बढती जाती है और कैंसर की ग्रोथ बढती जाती है। ये हम सभी जानते हैं कि कैंसर होने का मूल कारण यही है कि कोशिकाओं में ऑक्सीजन बहुत कम मात्रा में और ना के बराबर पहुँचता है। वहाँ पर मौजूद ग्लूकोस लैक्टिक एसिड में बदलना शुरू हो जाता है।

**Gout and PH – गठिया**

दूसरा उदहारण है– Gout, जिसको गठिया भी कहते हैं, इसमें रक्त में यूरिक एसिड की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे रक्त एसिडिक होना शुरू हो जाता है। जितना ब्लड अधिक एसिडिक होगा, उतना ही यूरिक एसिड उसमें ज्यादा जमा होना शुरू हो जायेगा। अगर हम ऐसी डाइट खाएँ, जिससे हमारा पेशाब अल्कलाइन हो जाए, तो ये बढ़ा हुआ यूरिक एसिड अल्कलाइन पेशाब में आसानी से बाहर निकल जायेगा।

**UTI and PH–पेशाब का संक्रमण**

तीसरा उदहारण है –– UTI जिसको Urinary tract infection कहते हैं, इसमें मुख्य रोग कारक जो बैक्टीरिया है, वो E-Coli है, ये बैक्टीरिया एसिडिक वातावरण में ही ज्यादा पनपता है। इसके अलावा Candida Albicanes नामक फंगस भी एसिडिक वातावरण में ही ज्यादा पनपता है। इसीलिए UTI तभी होते हैं, जब पेशाब की PH अधिक एसिडिक हो।

**Kidney and PH किडनी**

चौथा एक और उदाहरण देते हैं किडनी की समस्या मुख्यतः एसिडिक वातावरण में ही होती है, अगर किडनी का PH हम एल्कलाइन कर देंगे, तो किडनी से सम्बंधित कोई भी रोग नहीं होगा। मसलन क्रिएटिनिन, यूरिक एसिड, पत्थरी इत्यादि समस्याएँ, जो भी किडनी से सम्बंधित हैं, वो नहीं होंगी।

**वर्तमान स्थिति**

आजकल हम जो भी भोजन कर रहें हैं, वो 90 प्रतिशत तक एसिडिक ही है, और फिर हमारा सवाल होता है कि हम सही क्यों नहीं हो रहे? या फिर कहते हैं कि हमने ढेरों इलाज करवाए, मगर आराम अभी तक नहीं आया। बहुत दवा खायी, मगर फिर भी आराम नहीं हो रहा। तो उन सबका मुख्यः कारण यही है कि उनका PH लेवल कम हो जाना, अर्थात एसिडिक हो जाना।

**कैसे बढ़ाएँ PH level?**

**इन सभी Alkaline क्षारीय खाद्य पदार्थो का सेवन नित्य करिये...**

**फल** – सेब, खुमानी, ऐवोकैडो, केले, जामुन, चेरी, खजूर, अंजीर, अंगूर, अमरुद, नींबू, आम, जैतून, नारंगी, संतरा, पपीता, आडू, नाशपाती, अनानास, अनार, खरबूजे, किशमिश, इमली इत्यादि। इसके अलावा तुलसी, सेंधा नमक, टमाटर, अजवायन, दालचीनी, बाजरा इत्यादि।

**मुख्य बात**

आज सभी घरों में कंपनियों का पैकेट वाला आयोडीन सफेद नमक प्रयोग हो रहा है, ये धीमा जहर है, यह अम्लीय (cidic) होता है और इसमें सामान्य से आयोडीन की अधिक मात्रा भी होती है, जो अत्यंत घातक है शरीर के लिए। इस नमक से हृदय रोग, थायराइड, कैंसर, लकवा, नपुंसकता, मोटापा, एसिडिटी, मधुमेह, किडनी रोग, लिवर रोग, बाल झड़ना, दृष्टि कम होना जैसे अनेकों रोग कम आयु से बड़ी आयु तक के सभी घर के सदस्यों को हो रहे हैं, जो पैकेट नमक के प्रयोग से पूर्व कभी नहीं होते थे। इसलिए आयोडीन की कमी का झूठ फैलाकर बीमारी का सामान हर घर तक पहुंचाया गया, जिसने दवाइयों के कारोबार को अरबों, खरबों का लाभ पहुँचाया है।

# प्रयागराज में विहिप-केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक में पूज्य संतों हिन्दू समाज का मार्गदर्शन किया

प्रयागराज, 24 जनवरी। आज विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें देश के प्रमुख संत सम्मिलित हुए। केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल विश्व हिन्दू परिषद की वैधानिक इकाई है। केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल के मार्गदर्शन में विश्व हिन्दू परिषद आरम्भ से ही कार्य करता आया है। इस बैठक के उपरान्त आयोजित पत्रकार वार्ता में मंच पर उपस्थित पूज्य संत जगतगुरु आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानन्द गिरि जी तथा अध्यक्षता कर रहे आचार्य महामंडलेश्वर विशोकानन्द जी, विहिप के केन्द्रीय अध्यक्ष श्री आलोक कुमार जी, केन्द्रीय महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा जी ने बताया कि केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल के पूज्य संतों ने दुनिया भर के हिन्दू समाज की धार्मिक, सामाजिक, साँस्कृतिक आवश्यकताएँ, चुनौतियाँ और संकटों के संदर्भ में विचार करते हुए हिन्दू समाज का मार्गदर्शन किया है। जिसमें निम्नलिखित विषय–बिन्दुओं पर सन्तों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ–

- देश भर में हिन्दू मन्दिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त करने का जागरण अभियान प्रारम्भ हुआ है। आन्ध्र प्रदेश के विजयवाड़ा की बड़ा सभा से इस अभियान का शंखनाद हो चुका है। संतों ने आग्रह किया है कि सभी मन्दिर सरकारी नियंत्रण से मुक्त किये जाएँ, सरकारी नियंत्रण स्थापित करने वाले कानून हटाए जाएँ और मन्दिरों का प्रबंधन आस्था रखने वाले भक्तों को सौंपा जाए।

- हिन्दू समाज के घटते जन्मदर का प्रमुख कारण हिन्दू जनसँख्या में हो रहा असन्तुलन है। हिन्दू समाज के अस्तित्व की रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण दायित्व के रूप में हर हिन्दू परिवार में कम से कम तीन बच्चों का जन्म होना चाहिए। मार्गदर्शक मण्डल के पूज्य संतों ने आह्वान किया है कि हिन्दू समाज की जनसँख्या को संतुलित बनाये रखने के लिए हिन्दू समाज के जन्मदर को बढ़ाने की आवश्यकता है।

- वक्फ बोर्ड के निरंकुश व असीमित अधिकारों को नियंत्रित करने के लिए केन्द्र सरकार कानून सुधार अधिनियम लाने वाली है, उसका केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल स्वागत करती है और यह आह्वान करती है कि यह कानून पारित होना चाहिए तथा सभी दलों के सांसदों को इसमें सहयोग करना चाहिए।

- 1984 के धर्म संसद से लेकर अयोध्या, मथुरा, काशी तीनों मन्दिरों की प्राप्ति के लिए पूज्य संत समाज, हिन्दू समाज, विश्व हिन्दू परिषद तथा संघ भी संकल्प बद्ध था, है और भविष्य में भी रहेगा।

- भारत के उत्थान के लिए सामाजिक समरसता, पर्यावरण की रक्षा, कुटुम्ब प्रबोधन से हिन्दू संस्कारों का सिंचन तथा सामाजिक कुप्रथाओं का निर्मूलन, अपने स्व का आत्मबोध तथा अच्छे नागरिकों के कर्तव्य, ये राष्ट्रीय चारित्र्य के विकास हेतु समाज के लिए आवश्यक है।

इस बैठक में जिनका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, उसमें प्रमुख रूप से जगतगुरु शंकराचार्य वासुदेवानन्द सरस्वती जी, आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानन्द गिरि जी, आचार्य महामंडलेश्वर विशोकानन्द जी, महामंडलेश्वर विश्वात्मानन्द भारती जी, महामंडलेश्वर बालकानन्द जी, स्वामी चिदानंद मुनि जी, स्वामी राजेंद्र देवाचार्य जी, स्वामी कौशल्यानन्द गिरि जी, स्वामी अखिलेश्वरानन्द जी, स्वामी हरिहरानन्द जी, श्री महंत निर्मोही अखाड़ा राजेंद्र दास जी, पूज्य महंत रविन्द्र पुरी जी महानिर्वाणी, पूज्य महामंडलेश्वर चूड़ामणि जी भोपाल, पूज्य महामंडलेश्वर जितेंद्रानंदजी महामंत्री–संत समिति, पूज्य परमात्मानंद जी, महामंत्री आचार्य सभा, नामधारी से पूज्य उदय सिंह जी महाराज, पूज्य बालयोगी उमेशनाथ जी महाराज, महामंडलेश्वर पूज्य आत्मानंद जी नेपाल, पूज्य संग्राम सिंह जी, आन्ध्र प्रदेश, पूज्य केवलानंद जी सरस्वती, आन्ध्र प्रदेश, पूज्य भास्कर गिरि जी, देवगढ़, पूज्य बाबू सिंह जी, बंजारा समाज आदि उपस्थित रहे।

# दक्षिण गुजरात में समरसता यात्रा संपन्न

विश्व हिंदू परिषद सामाजिक समरसता अभियान द्वारा दक्षिण गुजरात के वलसाड़ विभाग में 6 दिवसीय 'डॉ बाबासाहेब अंबेडकर सामाजिक समरसता यात्रा' आहवा–डांग जिला, वलसाड़ जिला तथा नवसारी जिला में दिनांक 20 से 25 दिसंबर, 2024 तक 6 दिवसीय यात्रा माता शबरी मंदिर सुबीर डांग से पूज्य संत श्री पी.पी. स्वामी, पूज्य असीमानंद जी, आदिवासी समाज के युवा संत महंत श्री गिरिजानंद सरस्वती महाराज, दक्षिण गुजरात प्रांत अध्यक्ष राजेश भाई राणा, गुजरात क्षेत्र समरसता प्रमुख रसेश भाई रावल, दक्षिण गुजरात प्रांत समरसता प्रमुख अजीत सिंह सोलंकी, यात्रा संयोजक ईश्वर भाई मेहरा, सह संयोजक धर्मेंद्र भाई पटेल तथा बुनकर समाज के अग्रणी श्री हरीश भाई बछाव ने यात्रा को प्रस्थान करवाया।

• मुख्यतः यात्रा 6 दिन में 67 स्थान पर विशेष रूप से पहुँची। स्थान–स्थान पर यात्रा का स्वागत, सामूहिक पुष्पांजलि, सामूहिक आरती तथा यात्रा का स्वागत करने पहुँचे श्रद्धालुओं का तिलक कर स्वागत तथा सभी को प्रसाद वितरण किया गया।

• 6 दिन में यात्रा मार्ग में 5600 पत्रिका (हेन्ड बिल) का वितरण हाथों–हाथ किया गया।

• जहाँ–जहाँ यात्रा का स्वागत हुआ वहाँ–वहाँ यात्रा का उद्देश्य जयघोष... 'हिंदू–हिंदू भाई–भाई, जात–पात की करो विदाई' तथा सभी स्थानों पर संक्षिप्त समरसता के विषय को लेकर भाषण किया गया।

• सहभोज : तीन स्थानों झांखना गाँव, मोरजीरा गाँव तथा आसमा गाँव में पूरे गाँव के साथ भंडारा–सहभोज हुआ। कुल तीन स्थान पर 1500 लोगों की भंडारे में सहभागिता रही।

• **सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ** – यात्रा के दरमियाँ सात स्थान पर हनुमान चालीसा के पाठ हुए। विशेष दो स्थान पर आहवा–डांग, 1000 की सँख्या उपस्थिति रही तथा सभी ने सामूहिक रूप से महाप्रसाद ग्रहण किया। दूसरा वीरआंबा हनुमान मंदिर में 1500 की सँख्या रही और बड़ी सँख्या में माता–बहनें यात्रा का स्वागत, पुष्पांजलि करने पहुँची। सभी को प्रसाद वितरण किया गया। समरसता विषय को लेकर वक्तव्य हुआ।

• गणदेवी हरिजन वास में केंद्रीय अधिकारी श्री शंकर गायकर जी का प्रेरणादायी प्रवास परिचय हुआ। संत भी साथ में उपस्थित रहे, घर पर चाय पानी हुआ, 25 सँख्या उपस्थित रही।

• इसी प्रकार बिलिमोरा में मेघवाल बुनकर वास में संपर्क किया गया। संत भी साथ में उपस्थित रहे। वास में मंदिर दर्शन तथा दो परिवार में संपर्क परिचय तथा चाय पानी हुआ।

• पारडी में वाल्मिकी वास में यात्रा का स्वागत, सामूहिक आरती, पुष्पांजलि की गई। वाल्मीकि समाज के अग्रणी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

• वलसाड़ के शहीद चौक वाल्मिकी वास में यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। सामूहिक आरती, पुष्पांजलि तथा रामधुन के बाद जाहेर सभा संपन्न हुई। वाल्मीकि समाज की बेटी जिसे हॉकी में मेडल मिला था, उसका विहिप के द्वारा सम्मान किया गया। कुल 200 सँख्या उपस्थित रही।

• डांग में ओलंपिक मेडल विजेता सुनीता गायकवाड के माता–पिता का भी यात्रा के दरमियाँ पुष्पहार पहनाकर सम्मान किया गया तथा उनके द्वारा भी आरती पूजा की गई।

• वलसाड़ के वेजलपुर में यात्रा का ढोल–नगाड़े बजाकर, पटाखे फोड़ कर भव्य स्वागत किया गया तथा पूरे नगर के लोगों ने सामूहिक आरती, पुष्पांजलि तथा रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रम रास–गरबा किया। किन्नर समाज भी विशेष रूप से इसमें सम्मिलित हुआ।

• सेलवासा, नरोली में विद्यालय के 300 बच्चों ने रथ यात्रा में पुष्पांजलि अर्पण की तथा भारत माता का जयघोष किया।

• यात्रा के दरमियाँ रास्ते में पड़ने वाले चौराहे पर भगवान बिरसा मुंडा, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, स्वामी विवेकानंद, सरदार वल्लभभाई पटेल, पंडित सातवलेकर जी की प्रतिमा पर भी पुष्पांजलि की गई।

• यात्रा के दौरान अलग–अलग 25

मंदिरों के पास यात्रा का स्वागत, सामूहिक आरती, पुष्पांजलि एवं प्रसाद वितरण किया गया।

● आसमा गाँव में दोपहर को बड़ी सभा हुई तथा पूरे गाँव का सामूहिक सहभोज हुआ, 400 सँख्या उपस्थित रही।

● यात्रा में स्थान–स्थान पर संघ के पदाधिकारी तथा स्थानिक सांसद, विधायक, सरपंच भी जुड़कर यात्रा का स्वागत एवं पुष्पांजलि अर्पण की।

● प्रिंट मीडिया इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं सोशल मीडिया पेज पर सुंदर प्रचार–प्रसार हुआ। बड़ी सँख्या में सोशल मीडिया पर यात्रा का विस्तृत प्रचार हुआ।

● यात्रा में कुल सात संत जुड़े तथा कुल 68 स्थान पर समरसता विषय को लेकर संक्षिप्त भाषण हुआ। छः स्थानों पर सभा हुई तथा समरसता विषय को विस्तृत रूप से रखा गया।

● **समारोप** – 6 दिवसीय यात्रा का नवसारी जिले के चिखली में समारोप कार्यक्रम रखा गया। पूज्य संत श्री धर्मयुधिष्ठिर जी, इस्कॉन मंदिर, वनवासी संत महंत श्री गिरिजा नंद सरस्वती जी तथा श्री शंकर गायकर जी मुख्य वक्ता रहे। प्रांत मंत्री अजय भाई व्यास, सह मंत्री अश्विनभाई बारोट, क्षेत्रीय समरसता प्रमुख रसेश भाई रावल, प्रांत समरसता प्रमुख अजीत सिंह सोलंकी, बजरंग दल प्रांत संयोजक मयूर कदम तथा वलसाड़ विभाग के प्रमुख पदाधिकारी एवं नवसारी जिले के सभी कार्यकर्ता बंधु, समाज अग्रणी बड़ी सँख्या में विशेष रूप से उपस्थित रहे। समारोह के अंत में समरसता विषय को लेकर सभी ने कार्य करने का मन बनाया तथा पधारे हुए सभी आमंत्रित मेहमानों ने सामूहिक जलपान ग्रहण किया।

*प्रस्तुति : रसेश भाई रावल,*
*विश्व हिंदू परिषद–गुजरात क्षेत्र*
*समरसता प्रमुख।*

# 'विहिप धर्मरक्षा कार्यक्रम आयोजित'

रैगर समाज खो नागोरियान द्वारा रामदेव जी मंदिर में पीठाचार्य अखिल रामजन मंडल संत रघुवरदास जी, प्रदेश संयोजक रामजन मंडल सत्यदास जी, नाथ संप्रदाय के नंदेश्वर जी, कृष्णानंद जी एवं रामजन मंडल के राष्ट्रीय मंत्री बाबूलाल के पावन सान्निध्य मे धर्मरक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वप्रथम उपस्थित संतों ने धर्म के लिए बलिदान हुए संतों को पुष्पांजलि की।

मुख्य वक्ता विश्व हिंदू परिषद धर्मप्रसार के प्रांत प्रमुख सी.एम. भार्गव ने कहा कि जिस तरह आज देश में ईसाई मिशनरियों एवं अन्य विधर्मियों द्वारा भोले–भाले गरीब हिन्दुओं को लोभ–लालच में फंसाकर जबरन धर्मांतरण का कुचक्र बड़े पैमाने पर रचा जा रहा है, ठीक ऐसा ही परिदृश्य मध्ययुग में आक्रांता सिकंदर लोदी हिन्दुओं पर क्रूर अत्याचारों व जजिया कर लगाकर जबरन धर्मांतरण करवा रहा था, तब सदगुरु रामानंद द्वारा स्थापित द्वादश भक्त मंडली के अगुवा संत रैदास के नेतृत्व में भक्तिकालीन कवियों व संतों ने जबरन धर्मांतरण के खिलाफ जनजागृति अभियान प्रारंभ कर न केवल हिंदुओं को स्वधर्म में अडिग रहने का आत्मबल दिया, वरन लाखों धर्मांतरित लोगों का परावर्तन करवाया।

भार्गव ने उपस्थित संतों से आग्रह किया कि संत रैदास की तरह ही आप भी अपने क्षेत्र में धर्मांतरण के खिलाफ जनजागृति अभियान प्रारंभ करें। कार्यक्रम में भारती, कबीर पंथ, वैष्णव पंथ सहित अनेक पंथों के सैकड़ों का सान्निध्य प्राप्त हुआ एवं काफी सँख्या में भक्तजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन धर्मप्रसार प्रांत परावर्तन प्रमुख अशोक ने किया।

vhpdharamprasarjpr@gmail.com

# हिंदू हेरिटेज सेंटर मकर संक्रांति (पतंग महोत्सव) को नई ऊंचाइयों पर ले जाता है

रोटोरुआ में हिंदू हेरिटेज सेंटर ने जीवंत और पोषित पतंग महोत्सव, रविवार, 12 जनवरी, 2025 को मकर संक्रांति के एक शानदार उत्सव की मेजबानी की। रोटोरुआ हिंदी स्कूल, हिंदू के बच्चों, अभिभावकों और स्वयंसेवकों की उत्साही भीड़ धर्मशास्त्र कक्षाएँ, योग और ध्यान समूह और व्यापक रोटोरुआ समुदाय के सदस्य हिंदू सँस्कृति में रुचि लेकर हर्षोल्लास के साथ मनाया।

सौर कैलेंडर के अनुसार प्रतिवर्ष 14 जनवरी को मनाई जाने वाली मकर संक्रांति इनमें से एक है। हिंदू धर्म में सबसे प्राचीन और शुभ त्योहार, जिनकी उत्पत्ति 5,000 से अधिक साल पुरानी है। भारत भर में विभिन्न नामों से जाना जाता है – जैसे उत्तरायण, लोंहड़ी, बिहू, पोंगल, और भोगी – त्योहार विविधता में एकता का प्रतीक है, हिंदू विरासत की समृद्धि का जश्न मनाता है। 'बच्चों और युवाओं को इन शाश्वत परंपराओं में सक्रिय रूप से शामिल होते देखना सुखद है।'

न्यूजीलैंड की हिंदू काउंसिल के अध्यक्ष डॉ गुना मैगेसन ने कहा 'इस तरह की घटनाओं के माध्यम से, हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारी साँस्कृतिक जड़ें न केवल संरक्षित रहें, बल्कि अगली पीढ़ी के लोग भी इसे उत्साह के साथ अपनाएँ।" समारोह की शुरुआत बच्चों के साथ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई। वैदिक मंत्रों और श्लोकों का उच्चारण करते हुए वातावरण को श्रद्धा और आनंद से भर दिया। इसके बाद समर्पित स्वयंसेवक उर्वी ध्रुव राव के नेतृत्व में पतंग बनाने की कार्यशाला आयोजित की गई, जिसने इसे साझा किया।

रोटोरुआ हिंदी स्कूल और हिंदू स्क्रिप्चर क्लासेज के छात्रों के साथ उनकी विशेषज्ञता। एम.एस. राव का मार्गदर्शन रोमांचकारी पतंग–उड़ाने की गतिविधियों तक बढ़ा, जिनमें बच्चे और वयस्क समान रूप से शामिल थे। मीनाक्षी गुप्ता और रेखा ने कहा, 'पतंग उड़ाने से बचपन की बहुत सारी यादें ताजा हो गईं।' "इस आनंदमय परंपरा के साथ फिर से जुड़ना और इसे साझा करना अद्भुत था, हमारे बच्चों के साथ।" उत्सव के विस्तार में, मंगलवार, 14 जनवरी को सुश्री राव ने एक विशेष पतंग उत्सव का आयोजन किया। तियाकी अर्ली लर्निंग सेंटर के शिक्षकों के लिए कार्यशाला बनाना। इस पहल का उद्देश्य सुसज्जित करना है। युवा शिक्षार्थियों को पतंग बनाने की कला में शामिल करने और इसे और फैलाने का कौशल रखने वाले शिक्षक। मकर संक्रांति का आनंद एवं साँस्कृतिक महत्व। "मकर संक्रांति एक त्योहार से कहीं अधिक है, यह जीवन, एकजुटता और सांझा आनंद का उत्सव है। उर्वी ध्रुव राव ने कहा कि 'शिक्षकों को अपने छात्रों के साथ इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए देखना गहराई से संतुष्टिदायक है।'

2005 में मकर संक्रांति पर न्यूजीलैंड की हिंदू परिषद द्वारा रोटोरुआ की शुरुआत के बाद से समुदाय के भीतर एक पोषित परंपरा बन गई है। हाल के वर्षों में रोटोरुआ हिंदी 2 अक्टूबर, 2021 को उद्घाटन किए गए स्कूल ने इस उत्सव के आयोजन का बीड़ा उठाया है। 14 जनवरी, 2024 को स्कूल की हिंदी कक्षाएँ हिंदू हेरिटेज सेंटर में आयोजित की जाएंगी। डॉ गुना मैगेसन ने कहा कि स्कूल की गतिविधियों को केंद्र के साँस्कृतिक मिशन के साथ संरेखित करना। हिंदू हेरिटेज सेंटर इसके संरक्षण, प्रचार और उत्सव के लिए प्रतिबद्ध है। हिंदू धर्म की विविध साँस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत, जीवंत और समावेशी सद्कृति को बढ़ावा देना। हमारी दृष्टि एक ऐसी जगह बनाने की है, जहाँ सभी उम्र और पृष्ठभूमि के लोग एक साथ आ सकें, सीखें और हिंदू सँस्कृति की समृद्ध टेपेस्ट्री का जश्न मनाएँ।

hindu.nz@gmail.com

पटना में संस्कारशालाओं के आचार्यों के प्रशिक्षण वर्ग को संबोधित करते
विहिप केन्द्रीय मंत्री व अ.भा. सेवा प्रमुख अजय पारिक जी तथा वर्ग में उपस्थित संस्कारशाला के आचार्यगण

नई दिल्ली स्थित विहिप मुख्यालय में 26 जनवरी को
ध्वजारोहण करते वरिष्ठ प्रचारक धर्मनारायण शर्मा जी

न्यूजीलैण्ड में रोटोरुआ समुदाय दो सार्थक
घटनाओं के लिए हिंदू हेरिटेज सेंटर में एकजुट हुआ

बांका (बिहार) में 25 दिसम्बर को तुलसी पूजन कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 13.02.2025
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी